राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, मंगलवार, 31 मार्च 2026

वर्ष 14,अंक 338, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

अम्बेडकर नगर के मुकदमे को लेकर अधिवक्ताओं में रोष, निष्पक्ष जांच की उठी मांग...03

दल्ली में नकली ब्रांड का खेल, उत्तम नगर में छापेमारी; हार्पिक ब्रांड की फर्जी बोतलें बरामद...04

लिव-इन में रहने वाले कपल को जनगणना में माना जाएगा शादीशुदा लेकिन होगी एक शर्त

देश में अगली जनगणना को लेकर तैयारी जोरों पर चल रही है. बहुत जल्द ही यह प्रक्रिया शुरू होने वाली है. जनगणना 2027 के दौरान, एक ही घर में 'स्थिर रिश्ते' (Stable Union) में रहने वाले लिव-इन जोड़े (लिव-इन कपल) को भी शादीशुदा जोड़ा माना जाएगा. साथ ही जनगणना से जुड़े सवालों के जवाब के लिए किसी तरह का कोई सबूत देना नहीं होगा. अधिकारियों को वही जानकारी दर्ज करनी होती है जो घर के सदस्य उन्हें बताते हैं।

जनगणना के सेल्फ-एन्यूमरेशन पोर्टल पर दिए गए एफएक्यू (अक्सर पूछे जाने वाले सवालों) में एक सवाल- यह पूछे जाने पर कि क्या लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले कपल को सेल्फ-एन्यूमरेशन के दौरान या जनगणना करने वाले के घर आने पर शादीशुदा जोड़ा माना जाएगा- इस पर जवाब दिया गया, 'अगर वे (कपल) अपने रिश्ते को एक स्थिर रिश्ता मानते हैं, तो उन्हें शादीशुदा जोड़ा ही माना जाना चाहिए।'

33 सवालों की लिस्ट में एक सवाल यह भी

हालांकि इस मुद्दे पर पहली बार सार्वजनिक तौर पर कुछ कहा गया है- शायद इसलिए क्योंकि इस बार लोग खुद ही अपनी जानकारी भरेंगे- लेकिन पिछली जनगणना का हिस्सा रहे एक अधिकारी ने बताया कि जो अविवाहित कपल साथ रहते हैं और जनगणना करने वाले के सामने खुद को 'शादीशुदा' बताते है, उन्हें पहले भी इसी तरह दर्ज किया जाता था। जनगणना के 33 सवालों में से एक सवाल यह भी है कि एक घर में कितने शादीशुदा जोड़े रहते हैं. यह चरण 45 दिनों तक चलेगा. जनगणना का हाउसलिस्टिंग फेस 1 अप्रैल से 30 सितंबर के बीच चलेगा, जिसकी तारीखें हर राज्य या केंद्र शासित प्रदेश द्वारा अलग से अधिसूचित की जाएंगी. 45 दिन की इस अवधि के शुरुआती 15 दिन सेल्फ-एन्यूमरेशन यानी खुद जानकारी भरने के लिए होंगे, जिसके बाद अगले 30 दिनों तक जनगणना अधिकारियों द्वारा जानकारी जुटाने का काम चलेगा।

जानकारी के लिए सबूत देने की जरूरत नहीं

जनगणना से जुड़े नियमों के अनुसार, लोगों को अपने जवाबों को लेकर किसी तरह की दस्तावेजी सबूत देने की जरूरत नहीं होती है. उन्हें बस अपनी जानकारी और विश्वास के आधार पर सही-सही जवाब देने होते हैं. नियमों के मुताबिक, जनगणना करने वाले अधिकारियों को वही जानकारी दर्ज करनी होती है जो घर के सदस्य उन्हें बताते हैं।

सेल्फ-एन्यूमरेशन (एसई) की प्रक्रिया, राजधानी दिल्ली के एनडीएमसी इलाके में 1 अप्रैल से शुरू हो रही है, लोगों को एक खास वेब पोर्टल के जरिए अपनी जानकारी खुद भरने की सुविधा देती है. सेल्फ-एन्यूमरेशन की यह सुविधा अंग्रेजी और 15 अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है. सेल्फ-एन्यूमरेशन का काम घर का मुखिया जो घर-गृहस्थी के मामले संभालता है और जरूरी फैसले लेता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह घर का सबसे बुजुर्ग पुरुष सदस्य ही हो या घर का कोई भी अन्य जिम्मेदार वयस्क सदस्य, ओ.टी.पी-आधारित मोबाइल वेरिफिकेशन पूरा करने के बाद कर सकता है।

घर में आम तौर पर रहने वाले सभी सदस्यों की जानकारी, घर के लिए मिली एक ही पहुंच का इस्तेमाल करके दी जा सकती है. सेल्फ-एन्यूमरेशन की एक अहम शर्त यह है कि व्यक्ति अपने घर या निवास की जगह को सही-सही चिह्नित करे. इसके लिए, जवाब देने वालों को ड्रॉपडाउन मेनू से जिले का नाम चुनना होगा और पिन कोड डालना होगा, इसके बाद ही वे अपने गांव, मोहल्ले, गली या आस-पास के किसी जाने-पहचाने लैंडमार्क के बारे में जानकारी डाल पाएंगे।

जियोटैगिंग-आधारित नक्शा से मिलेगी जानकारी

'Search' ऑप्शन पर क्लिक करने पर उस इलाके का जियोटैगिंग-आधारित नक्शा खुल जाएगा. जवाब देने वाले को तब तक जूम इन करना होगा जब तक कि अलग-अलग घर दिखाई न देने लगें, और फिर मार्कर को ठीक अपने घर पर रखना होगा, यह पक्का करते हुए कि सड़क का सही किनारा और आस-पास के निशान मेल खाते हों. एफ एक्यूएस में यह भी जानकारी दी गई कि 'मार्कर को गलत जगह रखने से, गिनती करने वालों के ऐप में घर का डेटा उपलब्ध नहीं हो पाएगा।'

घर की हालत और सुविधाओं से जुड़ी जानकारी डालने के बाद, भरा हुआ फॉर्म जमा किया जा सकता है. 15 दिन की एसई अवधि के दौरान फॉर्म को कई अलग-अलग चरणों में भरा जा सकता है, जिसमें पूरी जानकारी को 'ड्राफ्ट' के तौर पर सेव करने का विकल्प भी होता है. इस पर एक एसई आई डी जेनरेट होगी जिसे गिनती करने वाले के आने पर उसके साथ शेयर करना होगा, ताकि वह बिल्डिंग नंबर, जनगणना घर का नंबर और जनगणना घर के इस्तेमाल की जानकारी जोड़ने के बाद डेटा को वेरिफाई और अपलोड कर सके।

ठग का शिकार हो गए बिहार के सीएम, इस्तीफा देने पर तेजस्वी ने नीतीश कुमार पर कसा तंज

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को विधान परिषद दे दिया है. इसे लेकर बिहार विधानसभा नेता प्रतिपक्ष और राजद के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष तेजस्वी यादव ने उन पर तंज कसा है. तेजस्वी ने कहा कि नीतीश कुमार ठग का शिकार हो गए. या यू कहें उन्हें ठगा गया है. तेजस्वी यादव ने कहा है कि यह निर्णय दबाव में लिया गया है और बिहार को ठगा गया है. मीडिया से बात करते हुए तेजस्वी यादव ने कहा अगर कोई भी दूसरे सदन में चुना जाता है तो एक सदन से इस्तीफा देता है. नीतीश जी को ठगा गया है. आज इसी को लेकर उन्होंने इस्तीफा दिया है. नीतीश कुमार को यह निर्णय दबाव में दिलवाया गया है. उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के ऊपर निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी ने बिहार की जनता को भी ठगा है. हम शुरू से कहते थे कि जब भी भाजपा की सरकार आएगी, उन्हें मुख्यमंत्री पद पर रहने नहीं देगी और आज वही हुआ है. चुनाव में जनतंत्र और मशीन तंत्र का उपयोग किया गया. इस दौरान तेजस्वी यादव ने मंत्री अशोक चौधरी को भी घेरा. यह पूछे जाने पर कि सीएम नीतीश कुमार के इस्तीफे पर कई मंत्री विधायक रो रहे. इस सवाल पर तेजस्वी ने कहा, कौन रो रहा क्या कर रहा वो नहीं जानते. नीतीश जी सब जानते हैं, लेकिन वो अब करें क्या. तेजस्वी यादव ने कहा कि आज कल लोग केवल कैमरा देखकर ड्रामा करते है. अब सब कुछ तो कर ही लिया है. कुछ बचा नहीं है. शुरू से कहते रहे हैं कि चुनाव के बाद नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री नहीं बनेंगे. इनको केवल 2-3 महीने के लिए मुख्यमंत्री बनाया गया और अब हटा रहे हैं. भाजपा के लोगों ने ठगने का काम किया. बिहार में पहले से ही देश में सबसे महंगी बिजली मिलती थी, चुनाव के बाद उसे और महंगा कर दिया गया। इन लोगों ने जनता को भी ठगा है.

निशांत कुमार पर क्या बोले तेजस्वी?

तेजस्वी यादव ने आगे कहा कि आजकल तो कुछ लोग पढ़ने का भी काम कर रहे हैं. कई लोग कलाकारी भी कर रहे हैं. ऐसे लोगों पर कोई टिप्पणी नहीं करेंगे. बिहार के मुद्दों पर बात होनी चाहिए, उस पर बात नहीं हो रही है. निशांत का आगे क्या भविष्य है, पूछे जाने पर तेजस्वी ने कहा कि इस पर हम कुछ टिप्पणी नहीं करेंगे. लेकिन अगर कोई भी युवा राजनीति में आता है तो उसका हम समर्थन करते हैं.

विधान परिषद से दिया इस्तीफा

बता दे कि सीएम नीतीश कुमार ने शुक्रवार को बिहार विधान परिषद की सदस्य से इस्तीफा दे दिया. 16 मार्च को राज्यसभा के लिए मनोनित होने के बाद ये बात कही जा रही थी कि 30 मार्च यानी आज नीतीश कुमार विधान परिषद से इस्तीफा दे सकते हैं. सोमवार की सुबह नीतीश कुमार ने इस्तीफा दे दिया. हालांकि अभी भी नीतीश बिहार के मुख्यमंत्री बने रहेंगे, जब तक दूसरे सीएम के नाम पर मुहर नहीं लग जाती

संक्षिप्त ख़बरें

ओडिशा से दिल्ली तक फैले गांजा तस्करी गिरोह का भंडाफोड़, मुख्य तस्कर गिरफ्तार

पूर्वी दिल्ली। पूर्वी जिला पुलिस की एंटी नारकोटिक्स स्क्वाड ने अंतरराज्यीय नशा तस्करी के नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने ओडिशा के कंधमाल जिले से गांजा की सप्लाई करने वाले मुख्य आरोपित आकाश कुमार (28) को गिरफ्तार किया है। इससे पहले पुलिस ने इसके दो साथियों गाजियाबाद निवासी अकबर और फिरोज खान गिरफ्तार किया था। इनके पास से 21 किलो गांजा व 46 ग्राम स्मैक बरामद हुई थी।

ओडिशा तक फैला है गिरोह

पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार रावल ने बताया कि नशा तस्करों पर नकेल कसने के लिए नारकोटिक्स स्क्वाड के इंचार्ज अरुण कुमार के नेतृत्व में एक टीम बनाई गई थी। टीम ने गाजियाबाद के दो तस्करों को पिछले सप्ताह खिचड़ीपुर से गिरफ्तार किया था। आरोपितों से पूछताछ करने पर पता चला कि ओडिशा तक गिरोह फैला हुआ है। गांजा ओडिशा से आता है। पुलिस की एक टीम ओडिशा के लिए रवाना हुई। इनकी निशानदेही पर पुलिस मुख्य तस्कर को ओडिशा के डिगल से गिरफ्तार कर लिया। आरोपित ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि जंगलों में उगने वाले गांजा को वह अवैध तरीके से इकट्ठा कर दिल्ली-एनसीआर में सप्लाई करता था। वह पिछले दो-तीन साल से इस अवैध धंधे में शामिल था।

झारखंड का शातिर शराब तस्कर दिल्ली पुलिस के हत्थे चढ़ा, 3 साल से चकमा दे रहा था भगोड़ा

पश्चिमी दिल्ली। पश्चिमी जिला पुलिस ने आबकारी अधिनियम के तहत दर्ज मामले में लंबे समय से फरार चल रहे एक शातिर अपराधी को गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान झारखंड के रामगढ़ निवासी सुनील राय (28) के रूप में हुई है, जो वर्ष 2023 से कानून की नजरों से बचकर झारखंड और दिल्ली के बीच अपनी पहचान छिपाकर रह रहा था। आरोपित के काम करने का तरीका बेहद शातिर था। 2023 में तीस हजारी कोर्ट द्वारा भगोड़ा घोषित किए जाने के बाद, वह लगातार अपने ठिकाने बदल रहा था। वह दिल्ली में मजदूरी की आड़ में छिपकर रह रहा था ताकि पुलिस की रडार से बाहर रह सके। वह तकनीकी सर्विलांस से बचने के लिए भी सावधानी बरत रहा था। उपायुक्त डी शरद भास्कर के निर्देशन में एएटीएस की एक विशेष टीम गठित की गई थी। टीम ने तकनीकी विश्लेषण और गुप्त सूचनाओं के आधार पर आरोपित के बारे में लगातार जानकारी जुटा रही थी। इसी दौरान 27 मार्च को सटीक सूचना मिलते ही पुलिस ने शिवाजी पार्क मेट्रो स्टेशन के पास से उसे पकड़ लिया। आरोपित के खिलाफ पंजाबी बाग थाने में मामला दर्ज था। पुलिस अब इस बात की जांच कर रही है कि फरारी के दौरान उसने किन अन्य अपराधों को अंजाम दिया है।

सुनवाई शुरू हुए बिना आरोपी को जेल में रखना सज़ा के समानः सुप्रीम कोर्ट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक फैसले के दौरान अहम टिप्पणी करते हुए कहा कि मुकदमे की सुनवाई शुरू किए बिना ही आरोपी को जेल में रखना सज़ा के समान है. इसके साथ ही अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि आपराधिक कार्यवाही में देरी से लंबी कैद को उचित नहीं ठहराया जा सकता. पंजाब के एक व्यक्ति को जबरन वसूली और हत्या की कोशिश संबंधित मामले में ज़मानत देते हुए जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस प्रसन्ना बी. वराले की पीठ ने कहा कि उनकी गिरफ्तारी को लगभग दो साल बीत चुके हैं और ट्रायल अभी तक शुरू नहीं हुआ है. ऐसे में इसके जल्द निष्कर्ष तक पहुंचने की कोई संभावना नहीं है। इस संबंध में मंगलवार (24 मार्च) को जारी अदालत के 13 मार्च के आदेश में पीठ ने कहा है, 'अपीलकर्ता की गिरफ्तारी को लगभग दो साल बीत चुके हैं, जबकि मुकदमा शुरू ही नहीं हुआ है और इसलिए इसके निष्कर्ष का कोई आसार नजर नहीं आ रहा है. बिना ट्रायल के कारावास सज़ा के समान है।' उल्लेखनीय है कि यह फैसला प्रदीप कुमार उर्फ बानू द्वारा दायर अपील पर आया है, जिसमें उन्होंने पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया गया था. उन्हें अप्रैल 2024 में भारतीय दंड संहिता के तहत हत्या के प्रयास और जबरन वसूली सहित कई अपराधों और आर्म्स एक्ट के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया गया था।

ईरान जंग के बीच अपने ही देश में घिरे ट्रंप

● नीतियों के खिलाफ अमेरिका में बड़े प्रदर्शन, लाखों लोग हुए शामिल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आव्रजन और विदेश नीति के खिलाफ अमेरिका के लोगों में आक्रोश बढ़ रहा है। इसी क्रम में पूरे अमेरिका में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए हैं। हजारों लोग 'नो किंग्स' के बैनर तले एकजुट हुए और राष्ट्रपति की नीतियों के खिलाफ अपना आक्रोश दिखाया। आयोजकों ने बताया कि ये प्रदर्शन एक सुनियोजित राष्ट्रीय अभियान का हिस्सा थे, जिसके तहत पूरे देश में 3,000 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सेंट पॉल स्थित मिनेसोटा स्टेट कैपिटल में हुई मुख्य रैली में सबसे अधिक भीड़ जुटी, जिसमें अनुमान के मुताबिक 2 लाख से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि अमेरिका के अलग-अलग राज्यों में 'नो किंग्स डे' प्रदर्शनों में 80 लाख से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया।

प्रदर्शनकारियों ने मार्च निकाला, नारे लगाए और ट्रंप प्रशासन की आलोचना करने वाले पोस्टर-बैनर लहराए। उनका खास निशाना प्रशासन की आव्रजन से जुड़ी सख्त कार्रवाई और ईरान के साथ चल रहे विवाद में उसकी भूमिका थी। कई शहरों में प्रदर्शनकारी मुख्य सड़कों पर कतार बनाकर खड़े हो गए, जबकि कुछ लोग सार्वजनिक चौराहों पर इकट्ठा होकर एक साथ नारे लगाते हुए और तख्तियां लहराते हुए विरोध जता रहे थे।

सेंट पॉल (मिनेसोटा) में हुई रैली इस दिन का सबसे अहम कार्यक्रम था। इसमें कई जाने-माने राजनेता और मशहूर सांस्कृतिक हस्तियां शामिल हुई।

गवर्नर टिम वॉल्ज ने भीड़ को संबोधित किया और सिंगर ब्रूस स्प्रिंगस्टीन का परिचय कराया, जिन्होंने इस मौके पर एक गीत भी गाया। सीनेटर बर्नी सैंडर्स, जोन बेज, मैगी रोजर्स और जेन फोंडा जैसी कई अन्य जानी-मानी हस्तियां भी इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हुई।

गौतमबुद्ध नगर पुलिस की बड़ी कार्रवाईः तीन साल में 1920 मादक पदार्थ तस्कर गिरफ्तार, नशे का नेटवर्क ध्वस्त

नोएडा। गौतमबुद्ध नगर कमिश्नरेट पुलिस मादक पदार्थ तस्करों का लगातार नेटवर्क तोड़ रही है। बंगाल, बिहार ओडिशा, विशाखापट्टनम आदि जगह से ट्रेन और ट्रक से माल के बीच छिपाकर गांजा लाकर एनसीआर में खपाने वाले पर भी शिकंजा कस रही है। बीते तीन साल में 1681 मामले दर्ज कर 1920 मादक पदार्थ तस्करों को सलाखों के पीछे पहुंचा चुकी है। कई बदमाशों पर गैंग्स्टर लगाने के अलावा संपत्ति भी कुर्क करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने बताया कि गौतमबुद्ध नगर कमिश्नरेट पुलिस एक जनवरी 2023 से 31 जनवरी 2026 तक नारकोटिक्स कानून के तहत 1681 मामले दर्ज कर चुकी है। इन मामलों में 1920 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। इनसे करीब 7270 किलो गांजा, नौ किलो से ज्यादा चरस, 105 किलो एमडीएमए (सिंथेटिक ड्रग), 500 ग्राम ओजी गांजा, नौ किलो डोडा, 630 ग्राम नशीला पाउडर और 885 नशीली गोलियां बरामद की गई हैं। इसके अलावा 3373 ई-सिगरेट भी बरामद की गई हैं।

पाकिस्तानी हैंडलरों के संपर्क में था शब्बीर, लश्कर-ए-तैयबा के आतंकी की गिरफ्तारी के बाद खुलासा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिल्ली पुलिस ने स्पेशल सेल की टीम ने लश्कर-ए-तैयबा (LeT) के आतंकी शब्बीर अहमद की गिरफ्तारी के बाद चौंका देने वाला खुलासा किया है. दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल के अधिकारी प्रमोद सिंह कुशवाहा ने बताया कि लोन दो हैंडलरों के संपर्क में था जिनके कोड नाम अबू हुजैफा और सुमामा बाबर थे. ये दोनों लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े ऑपरेटिव थे. प्रमोद सिंह कुशवाहा ने बताया कि स्पेशल सेल की टीम ने कल रात करीब 10 बजे गाजीपुर में लश्कर-ए-तैयबा के एक वांछित आतंकवादी शब्बीर अहमद लोन को गिरफ्तार किया है. आरोपी मेट्रो पोस्टर केस में फरार चल रहा था. प्रमोद सिंह ने बताया कि प्रमोद ने बताया कि आतंकी के पास से करीब 2,300 बांग्लादेशी टका बरामद किए गए. इसके साथ ही 3000 से 5000 पाकिस्तानी मुद्रा (3000 भारतीय रुपये) और एक नेपाली सिम कार्ड भी मिला है. इन सभी को जब्त कर लिया गया है.

बांग्लादेश से पहले कोलकाता के हटियारा को बनाया था ठिकाना

स्पेशल सेल के अधिकारी प्रमोद सिंह कुशवाहा ने बताया कि जांच करने पर पता चला है कि आतंकी शब्बीर अहमद लोन बांग्लादेश में रह रहा था. उससे पहले लोन ने कोलकाता के हटियारा में अपने मॉड्यूल के लिए ठिकाना बनाया था. ये लोन और उसके मॉड्यूल के सदस्यों के लिए एक सुरक्षित घर का काम करता था. इसके अलावा, लोन घनी आवाजाही वाले इलाकों में रेकी करता था, जहां आतंकवादी हमले किया जा सके. हाल ही में भी आरोपी ने कई इलाकों की रेकी थी.

पाकिस्तानी हैंडलरों के संपर्क में था लोन

दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल के अधिकारी प्रमोद सिंह कुशवाहा ने बताया कि उसका एक मॉड्यूल पहले ही खत्म किया जा चुका था, इसलिए वह नए रास्ते तलाशने और नए सदस्यों को भर्ती करने के मकसद से वापस आया था और इसी दौरान उसे पकड़ लिया गया. प्रमोद ने बताया कि आतंकी शब्बीर अहमद लोन दो हैंडलरों के संपर्क में था जिनके कोड नाम अबू हुजैफा और सुमामा बाबर थे. ये दोनों लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े ऑपरेटिव थे.

आतंकी लोन लगातार होता रहा है गिरफ्तार

उन्होंने बताया कि यह ध्यान देने योग्य है कि शुरू में जब उसे पहली बार 2007 में गिरफ्तार किया गया था. तो पूछताछ करने पर पता चला कि उसे सीधे जकी-उर-रहमान लखवी हैंडल कर रहा था. बाद में, जब उसे 2015 में फिर से गिरफ्तार किया गया, तो उसके साथ सज्जाद गुल को भी पकड़ा गया था. सज्जाद गुल को बाद में रिहा कर दिया गया, वह पाकिस्तान भाग गया, और वहां उसने TRF की स्थापना की.

ए-तैयबा के आतंकी की गिरफ्तारी के बाद खुलासा

पति की मौत के बाद क़ब्र के पास दस्तावेज संग पहुंची पत्नी, बोली- मैं ही हूं असली

ब्यूरो प्रयागराज। वाराणसीबेसिक शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में एक अजीबोगरीब मामला सामने आया है। यहां एक महिला दस्तावेजों संग बीएसए कार्यालय पहुंची और दावा किया कि वह मृत शिक्षक की असली पत्नी है। महिला ने अफसर के सामने हाथ जोड़कर गुहार लगाई है कि इस मामले से जुड़े सभी दस्तावेज उसके पास है और परिवार का पूरा विवरण भी दस्तावेजों में मौजूद है। बीएसए कार्यालय पहुंची मिथलेश देवी ने अधिकारियों से कहा कि वह स्वर्गीय रामवृक्ष की असली पत्नी है, जबकि एक महिला खुद को उनकी पत्नी होने का दावा करके विभाग से लाभ लेने की कोशिश कर रही है। मिथलेश देवी ने दस्तावेज और बच्चों संग मृत शिक्षक की तस्वीर दिखाकर बीएसए को आवेदन पत्र सौंपा और न्याय की मांग की है। दरअसल, रामवृक्ष चोलापुर क्षेत्र के पलकहा प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत थे। रामवृक्ष की 11 दिसंबर को मृत्यु हो गई। खुद को मृत शिक्षक की पत्नी होने का दावा करने वाली मिथलेश देवी ने बताया कि उनकी मौत के बाद विवाद शुरू हो गया और एक दूसरी महिला खुद को उनकी पत्नी होने का दावा कर रही है। मिथलेश देवी ने बताया कि वह महिला गाजीपुर की रहने वाली है और पहले से ही शादीशुदा है। इसके बावजूद वह विभाग को गुमराह कर सरकारी लाभ लेने की फिराक में है।

सीआरपीएफ कांस्टेबल भर्ती घोटाले में पूर्व डीआईजी सहित तीन को सजा, सीबीआई कोर्ट ने 17 साल पुराने मामले में सुनाया फैसला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। चर्चित सीआरपीएफ भर्ती 2009 घोटाले में लखनऊ की CBI कोर्ट में चली रही सुनवाई में बड़ा फैसला सुनाते हुए पूर्व DIG विनोद कुमार शर्मा समेत तीन आरोपियों को दोषी करार दिया है. शनिवार को सीबीआई कोर्ट ने सभी दोषियों को तीन-तीन साल के कठोर कारावास और कुल 1.20 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई है. करीब डेढ़ दशक से ज्यादा समय यानी 17 साल तक चले इस मामले में आखिरकार अदालत ने तीनों आरोपियों को सजा सुनाई. कोर्ट ने माना कि आरोपियों ने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए भर्ती प्रक्रिया में भ्रष्टाचार किया।

इस मामले में पूर्व DIG विनोद कुमार शर्मा के साथ CRPF के दो कर्मी सत्यवीर सिंह और तीरथ पाल चतुर्वेदी को दोषी करार दिया गया. अदालत ने सुनवाई के बाद तीनों को कठोर कारावास की सजा सुनाई. यह मामला CRPF में कांस्टेबल (जनरल ड्यूटी) भर्ती के दौरान घूसखोरी और अनियमितताओं का था, जिसमें चयन प्रक्रिया को प्रभावित करने के आरोप लगे थे।

सीबीआई ने इस मामले को 23 फरवरी 2009 को सोर्स इनपुट के आधार पर मुकदमा दर्ज किया था. जांच के दौरान सामने आया कि भर्ती प्रक्रिया में बड़े स्तर पर भ्रष्टाचार किया जा रहा था. जांच एजेंसी ने पाया कि आरोपी अधिकारियों ने कई अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर एक साजिश रची थी, जिसके तहत भर्ती में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों से पैसे लिए गए थे। डीआईजी शर्मा ने भर्ती कार्यक्रम और उपलब्ध रिक्तियों के बारे में बिचौलियों को पहले से ही जानकारी उपलब्ध करा दी गई थी, जिसके आधार पर संभावित उम्मीदवारों को भर्ती की गारंटी के बदले में भारी रिश्वत वसूले गए थे. एजेंसी ने एक साल के भीतर 2010 में आरोपपत्र दाखिल किया, जिसके बाद 2012 में दूसरा आरोपपत्र दाखिल किया गया।

जियो और जीने दो: आज की सबसे बड़ी आवश्यकता

महावीर जयंती: आत्ममंथन, संयम और जागृति का पावन पर्व

[एक ज्योति जो युगों से जल रही है: भगवान महावीर की विचारधारा]

जब मानवता मार्ग से विचलित होती है, हिंसा, लोभ और असत्य का अंधकार फैलता है, तब इतिहास में एक दिव्य प्रकाश प्रकट होता है, जो युग को दिशा देता है और पीढ़ियों को प्रेरित करता है। लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व वैशाली के समीप कुंडलपुर की पावन भूमि पर जन्मे भगवान महावीर स्वामी ऐसी ही अद्वितीय विभूति थे। उनका जन्म मात्र एक तीर्थंकर का आगमन नहीं, बल्कि एक ऐसी चेतना-क्रांति का आरंभ था, जिसने मानव जीवन को अहिंसा, करुणा और सत्य के उच्चतम आदर्शों तक पहुंचाया। उनके विचार आज भी उतने ही सजीव और प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थे–यह सिखाते हुए कि सच्ची विजय हिंसा नहीं, प्रेम और संयम से प्राप्त होती है।

जब सत्य और आत्मबोध की खोज प्रबल होती है, तब महापुरुषों का जीवन मार्गदर्शक बनता है। 599 ईसा पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को जन्मे भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे, किंतु उनका दर्शन किसी एक संप्रदाय तक सीमित नहीं रहा। वे विश्व-गुरु थे, जिनके संदेश ने समस्त मानवता को नई दिशा दी। 'अहिंसा परमो धर्मः' उनका अमर सिद्धांत था–जो केवल वाणी नहीं, बल्कि जीवन का आधार है, जिस पर शांति और समृद्धि टिकी है। उन्होंने सिखाया कि सिद्धांतों को कहना नहीं, जीना आवश्यक है। राजसी वैभव त्यागकर और 12 वर्षों की कठोर तपस्या के पश्चात कैवल्य ज्ञान प्राप्त कर उन्होंने सिद्ध किया कि आत्मबल ही सर्वोच्च शक्ति है।

महावीर का जीवन स्वयं एक सजीव विश्वविद्यालय था। 30 वर्ष की आयु में संन्यास लेकर उन्होंने जो मार्ग अपनाया, वह अत्यंत कठोर था। नंगे पांव, बिना किसी संपत्ति के, विपरीत परिस्थितियों और उपहास के बीच भी वे अडिग रहे। उनकी तपस्या केवल बाहरी कष्ट नहीं, बल्कि मन, क्रोध और लोभ पर विजय की आंतरिक साधना थी। कैवल्य ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्होंने 30 वर्षों तक जन-जन को यह सिखाया कि जीवन का लक्ष्य भौतिक सुख नहीं, आत्म-मुक्ति है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे उनके पंच महाव्रत आज भी जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने की राह दिखाते हैं।

वर्तमान समय में भगवान महावीर के संदेश और भी अधिक सार्थक प्रतीत होते हैं। विश्व में हिंसा, युद्ध, आतंकवाद और पर्यावरण संकट चरम पर हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, बीते दशक में 20 लाख से अधिक लोग हिंसक संघर्षों से विस्थापित हुए हैं और जलवायु परिवर्तन से प्राकृतिक आपदाएँ 35% बढ़ी हैं। ऐसे दौर में उनका 'जियो और जीने दो' सिद्धांत केवल आदर्श नहीं, एक व्यावहारिक मार्ग है। यदि मानवता का एक अंश भी अहिंसा और संयम अपनाए, तो संघर्ष घट सकते हैं और प्रकृति से संतुलन स्थापित हो सकता है। शाकाहार अपनाने से न केवल हिंसा कम होती है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन भी घटता है–यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है।

भारत में जैन समुदाय इसका सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। लगभग 45 लाख अनुयायी आज भी महावीर के सिद्धांतों को जीवन में उतारते हैं। वे अहिंसा के साथ दान, संयम और सेवा द्वारा समाज को सुदृढ़ बनाते हैं। यह संयोग नहीं कि भारत जैसे विविध देश में सह-अस्तित्व की भावना जीवित है–इसका श्रेय महावीर के दर्शन को है। उनके पंच महाव्रत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं–अहिंसा हिंसा से दूर रखती है, सत्य नैतिकता सिखाता है, अस्तेय लोभ से बचाता है, ब्रह्मचर्य संयम देता है और अपरिग्रह संग्रह की प्रवृत्ति को त्यागना सिखाता है। ये सिद्धांत व्यक्ति ही नहीं, समाज को भी समृद्ध बनाते हैं।

महावीर जयंती का दिन केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का एक पवित्र अवसर है–एक ऐसा क्षण, जो हमें अपने भीतर झांकने और आत्म-मंथन करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्चा धर्म मंदिरों की भव्यता या रस्मों के शोर में नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन के सरल, पवित्र और सच्चे कर्मों में निहित है। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हम अपने भीतर की कमजोरियों–हिंसा, क्रोध और ईर्ष्या–को पहचानें और दृढ़ संकल्प के साथ उन्हें समाप्त करने का प्रयास करें। आज के समय में, जब सोशल मीडिया नफरत और विभाजन को बढ़ावा दे रहा है, महावीर का संदेश एक प्रकाशस्तंभ की तरह हमें मार्ग दिखाता है–यह सिखाता है कि वाणी में संयम और विचारों में शुद्धता ही सच्ची मानवता की पहचान है।

मानव जीवन के समक्ष आज दो स्पष्ट और निर्णायक मार्ग खड़े हैं–या तो हम उस गहन अंधकार में विलीन हो जाएं, जहां हिंसा, स्वार्थ और विनाश की शक्तियां प्रभावी हैं, या महावीर की तपस्या से प्रज्ज्वलित उस दिव्य, शाश्वत ज्योति को पूर्ण श्रद्धा से अपनाएं। यह ज्योति हमारे हृदय में शांति, करुणा और संतुलन का संचार करती है तथा ऐसे विश्व की कल्पना को साकार करती है, जहां प्रत्येक प्राणी प्रेम, सम्मान और सह-अस्तित्व के साथ जीवन व्यतीत करता है। आज, इस पावन और प्रेरणादायी क्षण में, हमें एक दृढ़ और अटूट संकल्प लेना चाहिए–अहिंसा को अपने जीवन का मूल आधार बनाएं, सत्य को अपनी अडिग शक्ति और करुणा को वह दिव्य प्रकाश, जो संपूर्ण संसार को प्रेम, सद्भाव और मानवता की उज्ज्वल आभा से आलोकित कर दे।

महावीर का जीवन एक प्रखर संदेश, जागृत पुकार और अनंत प्रेरणा का स्रोत है। वे बताते हैं कि सच्ची विजय बाहरी संसार में नहीं, बल्कि अपने ही मन के गहरे संघर्षों को जीतने में निहित है। जब हम उनके दिव्य दर्शन को आत्मसात कर अपने आचरण में उतारते हैं, तब उनका प्रकाश हमारे जीवन, समाज और संपूर्ण विश्व को निरंतर आलोकित करता है। यही उनकी जयंती का वास्तविक अर्थ है–एक ऐसी शाश्वत विजय, जो समय की सीमाओं से परे जाकर सदैव मानवता को मुक्ति का पथ दिखाती रहती है। महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं। जय महावीर–जय विश्व शांति, जय विश्वमंगल।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

देविका रानी, जिसने भारतीय सिनेमा उद्योग की दिशा बदल दी

भारतीय सिनेमा के इतिहास में कुछ नाम ऐसे हैं जिन्होंने केवल अभिनय नहीं किया, बल्कि पूरे उद्योग की दिशा और सोच को बदल दिया। देविका रानी भी उन्हीं विरल व्यक्तित्वों में से एक थीं। उन्हें 'भारतीय सिनेमा की प्रथम महिला' कहा जाता है, और यह उपाधि केवल सम्मानसूचक नहीं बल्कि उनके व्यापक योगदान की सच्ची पहचान है। वह उस दौर में उभरीं जब भारतीय फिल्म उद्योग अपने प्रारंभिक स्वरूप में था और सामाजिक दृष्टि से फिल्मों में काम करना महिलाओं के लिए सहज नहीं माना जाता था। ऐसे समय में देविका रानी ने न केवल अभिनय किया, बल्कि सिनेमा को आधुनिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकारों से जोड़ा।

देविका रानी का जन्म एक समृद्ध और शिक्षित परिवार में हुआ था, जिसने उन्हें बचपन से ही स्वतंत्र सोच और कला के प्रति झुकाव दिया। उन्होंने अपनी शिक्षा इंग्लैंड में प्राप्त की, जहां उन्होंने अभिनय, संगीत, और डिज़ाइन का अध्ययन किया। विदेशी परिवेश में मिली यह शिक्षा उनके व्यक्तित्व को आधुनिक, आत्मविश्वासी और प्रयोगधर्मी बनाती है। यही कारण था कि जब वे भारत लौटीं, तो उनका दृष्टिकोण अपने समय की अन्य अभिनेत्रियों से बिल्कुल अलग था। हिमांशु राय से उनका मिलना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। दोनों ने मिलकर न केवल विवाह किया, बल्कि भारतीय सिनेमा को नई दिशा देने का संकल्प भी लिया।

1934 में उन्होंने बॉम्बे टॉकीज़ की स्थापना की, जो उस समय का सबसे आधुनिक और संगठित फिल्म स्टूडियो बना। इस स्टूडियो ने भारतीय फिल्मों को तकनीकी और कलात्मक दृष्टि से एक नया स्तर प्रदान किया। यहाँ काम करने का अनुशासन, निश्चित कार्य समय, और कलाकारों को नियमित वेतन देने जैसी व्यवस्थाएँ उस समय क्रांतिकारी थीं। यह स्टूडियो केवल फिल्मों का निर्माण नहीं करता था, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन का केंद्र बन गया था, जिसने भारतीय सिनेमा को पेशेवर रूप दिया।

देविका रानी का अभिनय भी उतना ही प्रभावशाली था जितना उनका प्रबंधन कौशल। उन्होंने 1930 के दशक में कई महत्वपूर्ण फिल्मों में काम किया, जिनमें उनकी जोड़ी अशोक कुमार के साथ विशेष रूप से लोकप्रिय हुई। उनकी फिल्म अछूत कन्या भारतीय सिनेमा की एक मील का पत्थर मानी जाती है। यह फिल्म जाति व्यवस्था जैसे संवेदनशील विषय पर आधारित थी और एक ब्राह्मण युवक और अछूत लड़की की प्रेम कहानी को प्रस्तुत करती थी। उस समय ऐसे विषयों पर खुलकर बात करना साहस का काम था, और देविका रानी ने अपने अभिनय के माध्यम से समाज के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा किया।

उनकी फिल्मों की विशेषता यह थी कि वे केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं थीं, बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों, स्त्री की स्थिति, और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को भी उजागर करती थीं। उनके पात्र अक्सर परंपराओं को चुनौती देते थे और अपनी इच्छाओं तथा अधिकारों के लिए खड़े होते थे। यही कारण है कि उन्हें एक प्रगतिशील और साहसी अभिनेत्री के रूप में देखा जाता है।

देविका रानी का व्यक्तिगत जीवन भी उतना ही नाटकीय और जटिल था जितना उनका फिल्मी जीवन। उनके जीवन में कई उतार-चढ़ाव आए, जिनमें उनके वैवाहिक संबंधों में तनाव और फिल्मी दुनिया के भीतर की राजनीति भी शामिल थी। एक समय ऐसा भी आया जब उनके और उनके सह-कलाकार के बीच संबंधों की चर्चा ने उनके करियर को प्रभावित किया, लेकिन उन्होंने अपने आत्मबल और पेशेवर दृष्टिकोण से इन परिस्थितियों का सामना किया और पुनः अपने स्थान को स्थापित किया।

1940 में हिमांशु राय के निधन के बाद देविका रानी ने अकेले ही बॉम्बे टॉकीज की जिम्मेदारी संभाली। यह उनके नेतृत्व कौशल का प्रमाण था कि उन्होंने इस स्टूडियो को न केवल बनाए रखा बल्कि उसे सफलतापूर्वक आगे भी बढ़ाया। उन्होंने कई नई प्रतिभाओं को अवसर दिया, जिनमें आगे चलकर भारतीय सिनेमा के बड़े नाम बने कलाकार भी शामिल थे। इस प्रकार वे केवल एक अभिनेत्री नहीं, बल्कि एक निर्माता और मार्गदर्शक भी थीं।

हालाँकि, समय के साथ स्टूडियो के भीतर मतभेद और उद्योग की बदलती परिस्थितियों ने उन्हें फिल्म जगत से दूर कर दिया। 1945 में उन्होंने फिल्मों से संन्यास ले लिया और बाद में रूसी चित्रकार स्वेतोस्लाव रोएरिच से विवाह कर लिया। इसके बाद उन्होंने अपेक्षाकृत शांत जीवन बिताया और सार्वजनिक जीवन से दूरी बना ली। लेकिन उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सका।

देविका रानी को उनके अद्वितीय योगदान के लिए अनेक सम्मान मिले। उन्हें भारत का सर्वोच्च सिनेमा सम्मान, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, प्राप्त करने वाली पहली कलाकार होने का गौरव मिला। यह सम्मान उनके द्वारा स्थापित मानकों और उनके द्वारा सिनेमा को दिए गए नए आयामों की स्वीकृति था।

उनकी विरासत केवल उनकी फिल्मों तक सीमित नहीं है, बल्कि उस दृष्टिकोण में भी है जो उन्होंने भारतीय सिनेमा को दिया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन भी हो सकता है। उन्होंने महिलाओं के लिए इस क्षेत्र में नए द्वार खोले और यह दिखाया कि वे केवल पर्दे पर ही नहीं, बल्कि पर्दे के पीछे भी नेतृत्व कर सकती हैं।

आज जब हम भारतीय सिनेमा के विकास को देखते हैं, तो स्पष्ट होता है कि उसकी नींव में देविका रानी जैसे व्यक्तित्वों का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने न केवल अपने समय को प्रभावित किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया। उनका जीवन संघर्ष, साहस, और सृजनात्मकता का अद्भुत उदाहरण है, जो यह सिखाता है कि यदि दृष्टि स्पष्ट हो और संकल्प मजबूत, तो कोई भी बाधा व्यक्ति को अपने लक्ष्य से नहीं रोक सकती। देविका रानी का नाम भारतीय सिनेमा के इतिहास में सदैव सम्मान के साथ लिया जाएगा, क्योंकि उन्होंने केवल अभिनय नहीं किया, बल्कि एक स्वर्णिम युग का निर्माण किया।

महेन्द्र तिवारी

बड़े आर्थिक फैसले, मगर आम आदमी की मुश्किलें और बड़ी

[करों में कमी आई, पर जेब पर बोझ कम क्यों नहीं हुआ?]

ईरान-अमेरिका-इजराइल संघर्ष की तपिश में उबलता होर्मुज स्ट्रेट आज भारत की आर्थिक नब्ज़ पर रखा वह दबाव है, जो हर धड़कन के साथ महंगाई की सुई को और ऊपर चढ़ा रहा है। कच्चे तेल की कीमतें 120 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच चुकी हैं और आयात पर निर्भर देश के लिए यह केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि आम आदमी की रोजमर्रा की जंग बन चुका है। सुबह की चाय से लेकर रात की रसोई तक, हर खर्च में ईंधन की आग झलक रही है। ऐसे समय में जब सरकार ने एक्साइज ड्यूटी में 10-10 रुपये की कटौती का ऐलान किया, तो लगा जैसे राहत की पहली बूंद गिरी है—लेकिन जब पेट्रोल पंप पर कीमतें जस की तस रहीं, तो यह बूंद भी धुएं में बदलती नजर आई। सवाल अब और तीखा हो गया है—क्या यह राहत सिर्फ आंकड़ों की बाजीगरी है या सच में जनता तक पहुंचेगी? सरकार का कदम निश्चित रूप से त्वरित और साहसिक कहा जा सकता है। राजस्व में भारी कमी का जोखिम उठाकर केंद्र ने पेट्रोल और डीजल पर कर घटाए, ताकि तेल कंपनियों के बढ़ते घाटे को थामा जा सके। पेट्रोलियम क्षेत्र के जानकारों के अनुसार कंपनियां प्रति लीटर भारी नुकसान झेल रही थीं, और यह कटौती उनके अस्तित्व को संतुलित करने के लिए जरूरी थी। लेकिन इस निर्णय ने एक नया द्वंद्व भी पैदा कर दिया—सरकार ने अपनी आमदनी छोड़ी, कंपनियों को राहत दी, पर उपभोक्ता को तत्काल राहत क्यों नहीं मिली? यही वह बिंदु है जहां नीति की मंशा और उसके प्रभाव के बीच की दूरी साफ दिखाई देती है। दरअसल, ईंधन मूल्य निर्धारण की परतें इतनी जटिल हैं कि एक स्तर पर किया गया सुधार दूसरे स्तर पर जाकर निष्प्रभावी हो जाता है। अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में उछाल, राज्यों द्वारा लगाए गए वैट, डीलर कमीशन और अन्य शुल्क—इन सबका संयुक्त प्रभाव यह रहा कि एक्साइज कटौती का लाभ सीधे उपभोक्ता तक नहीं पहुंच सका। नतीजा यह हुआ कि कीमतें बढ़ने से जरूर बचीं, लेकिन घट भी नहीं सकीं। आम आदमी के लिए यह गणित नहीं, बल्कि अनुभव है—जब जेब से उतना ही पैसा निकल रहा है, तो राहत का दावा खोखला लगता है। इस महंगाई का दायरा ईंधन तक सीमित नहीं, बल्कि यह पूरे आर्थिक तंत्र में फैल चुकी है। परिवहन महंगा होने से खाद्य पदार्थों के दाम तेजी से बढ़े हैं, और इसका सीधा असर मध्यम और निम्न वर्ग पर पड़ा है। थोक मूल्य सूचकांक का उछाल इस बात का संकेत है कि बाजार में लागत का दबाव लगातार बढ़ रहा है। रसोई गैस, दूध, सब्जियां—हर जरूरी वस्तु अब पहले से ज्यादा महंगी हो चुकी है। यह स्थिति केवल खर्च बढ़ने की नहीं, बल्कि जीवन स्तर के गिरने की भी है, जहां आम आदमी अपनी जरूरतों को सीमित करने के लिए मजबूर हो रहा है।

विशेषज्ञों का आकलन इस संकट को और गहराई से समझने की ओर इशारा करता है। भारत की ऊर्जा निर्भरता और वैश्विक बाजार पर अत्यधिक आश्रय इस समस्या की जड़ है। जब भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तनाव बढ़ता है, भारत की अर्थव्यवस्था पर उसका सीधा प्रभाव पड़ता है। हर 10 डॉलर की वृद्धि महंगाई को और बढ़ा देती है, जिससे मौद्रिक नीति की सीमाएं भी उजागर हो जाती हैं। यदि सरकार ने समय पर हस्तक्षेप न किया होता, तो स्थिति और भी गंभीर हो सकती थी। लेकिन यह भी स्पष्ट है कि केवल तात्कालिक राहत से इस दीर्घकालिक समस्या का समाधान संभव नहीं।

यहीं पर सरकार की भूमिका और अधिक व्यापक हो जाती है। केवल करों में कटौती करना पर्याप्त नहीं, बल्कि ऊर्जा नीति को दीर्घकालिक दृष्टि से पुनर्गठित करना आवश्यक है। रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को मजबूत करना, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना और आयात के स्रोतों में विविधता लाना—ये कदम अब विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुके हैं। यदि इन क्षेत्रों में ठोस निवेश और नीतिगत स्पष्टता लाई जाए, तो भविष्य में ऐसे संकटों का प्रभाव काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसके साथ ही, राहत उपायों को अधिक लक्षित और प्रभावी बनाने की जरूरत है। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के जरिए जरूरतमंद वर्ग को सीधी सहायता दी जा सकती है, जिससे राहत का असर तुरंत महसूस हो। राज्य सरकारों के साथ समन्वय स्थापित कर वैट में कमी लाने की दिशा में भी ठोस पहल जरूरी है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया पारदर्शी हो, ताकि जनता को यह समझ आ सके कि कीमतों में बदलाव क्यों नहीं हो रहा। जब जानकारी स्पष्ट होती है, तो असंतोष की जगह समझ पैदा होती है। महंगाई पर नियंत्रण केवल नीतिगत निर्णयों का मामला नहीं, बल्कि शासन की इच्छाशक्ति और दूरदर्शिता की परीक्षा है। आम जनता को राहत तब मिलेगी जब नीतियां कागजों से निकलकर वास्तविक जीवन में असर दिखाएंगी। आज जरूरत है एक ऐसे दृष्टिकोण की, जो संकट को अवसर में बदले और भारत को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाए। जब पेट्रोल पंप पर कीमतें सच में घटेंगी और बाजार में राहत दिखेगी, तभी यह भरोसा लौटेगा कि सरकार के फैसले केवल घोषणाएं नहीं, बल्कि समाधान भी हैं।

संपादकीय

युद्ध की हिंसा, उन्माद से त्रासदी झेलता आम आदमी

पश्चाताप में धधकते परिणाम।

युद्ध का उन्माद मानव सभ्यता के इतिहास का सबसे त्रासद अध्याय रहा है, जहाँ शक्ति, प्रभुत्व और स्वार्थ की अंधी दौड़ में मनुष्य अपने ही अस्तित्व को दांव पर लगा देता है। जब राष्ट्रवाद की आग विवेक पर भारी पड़ती है, तब युद्ध केवल सीमाओं का संघर्ष नहीं रह जाता, वह मनुष्यता के मूल्यों का भी विध्वंस बन जाता है। युद्ध चाहे किसी भी काल में हुआ हो, उसका परिणाम सदैव एक-सा ही रहा है विनाश, पीड़ा और पश्चाताप। दो विश्व युद्धों की विभीषिका ने यह स्पष्ट कर दिया कि हिंसा से किसी भी समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं है, बल्कि यह नई समस्याओं और घावों को जन्म देती है।

युद्ध के मैदान में केवल सैनिक ही नहीं मरते, बल्कि उनके साथ असंख्य निर्दोष नागरिक भी अपनी जान गंवाते हैं, जिनका उस संघर्ष से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता। उनके सपने, उनकी आशाएँ और उनका भविष्य सब कुछ एक पल में राख हो जाता है। जब कोई माँ अपने बेटे को खोती है, जब कोई बच्चा अपने पिता की लाश देखता है, तब राष्ट्र की जीत का कोई अर्थ नहीं रह जाता, केवल एक गहरी शून्यता और असहनीय पीड़ा शेष रह जाती है। यही वह क्षण होता है जब मनुष्य को आत्मज्ञान का बोध होता है कि उसने क्या खो दिया और किस कीमत पर। युद्ध का वास्तविक चेहरा तब सामने आता है जब शहरों के खंडहर, जली हुई फसलें, उजड़े हुए घर और रोते हुए लोग उसकी गवाही देते हैं। आधुनिक समय में भी स्थिति कुछ अलग नहीं है, चाहे वह रूस-यूक्रेन का संघर्ष हो, इजरायल-फिलिस्तीन का विवाद हो या अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ता तनाव हर जगह एक समान पीड़ा और विनाश का दृश्य देखने को मिलता है।

इन संघर्षों में सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों के निर्णयों का भार आम नागरिकों को उठाना पड़ता है, जो अपनी जान देकर उन महत्वाकांक्षाओं को पूरा करते हैं जिनसे उनका कोई लेना-देना नहीं होता। युद्ध केवल मानव जीवन को ही नहीं, बल्कि आर्थिक व्यवस्था को भी गहरे संकट में डाल देता है। उद्योग धंधे ठप हो जाते हैं, महंगाई आसमान छूने लगती है, बेरोजगारी बढ़ती है और विकास की गति रुक जाती है। एक देश को वर्षों पीछे धकेल देने वाला यह विनाश केवल भौतिक नहीं होता, बल्कि मानसिक और सामाजिक स्तर पर भी गहरा असर छोड़ता है। युद्ध के बाद बचता है तो केवल एक टूटा हुआ समाज, जिसमें अविश्वास, भय और असुरक्षा की भावना घर कर जाती है।

यही कारण है कि इतिहास हमें बार-बार यह सिखाने का प्रयास करता है कि युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं है, बल्कि यह समस्याओं को और जटिल बना देता है। आत्मज्ञानी व्यक्ति और संवेदनशील समाज इस सत्य को समझते हैं कि शांति ही वह मार्ग है जो मानवता को आगे बढ़ा सकता है। युद्ध के बाद जब धूल बैठती है और लोग अपने खोए हुए प्रियजनों की याद में रोते हैं, तब उन्हें यह अहसास होता है कि उन्होंने क्या खोया है और क्या पाया है। उस समय कोई भी जीत सार्थक नहीं लगती, क्योंकि जीत की कीमत बहुत अधिक होती है। युद्ध की राख से उठने वाली यह चेतना ही आत्मज्ञान का वास्तविक रूप है, जो हमें यह समझाती है कि हिंसा और घृणा के मार्ग पर चलकर हम केवल विनाश ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि मानवता को बचाना है, तो हमें संवाद, सहिष्णुता और प्रेम का मार्ग अपनाना होगा। युद्ध का उन्माद क्षणिक हो सकता है, लेकिन उसके परिणाम पीढ़ियों तक महसूस किए जाते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम इतिहास से सीख लें और भविष्य को बेहतर बनाने के लिए शांति का मार्ग चुनें, क्योंकि अंततः वही मार्ग हमें सच्चे अर्थों में मानव बनाता है।

संजीव ठाकुर

आज के अशांत युग में भगवान महावीर के सिद्धांतों की अमर प्रासंगिकता

31 मार्च महावीर जयंती

मानव सभ्यता आज अभूतपूर्व विकास के शिखर पर खड़ी है, परंतु इसके साथ ही हिंसा, तनाव, लालच और असंतुलन भी बढ़ता जा रहा है। भौतिक उपलब्धियों के बावजूद मनुष्य भीतर से अशांत और असंतुष्ट दिखाई देता है। ऐसे समय में भगवान महावीर के लगभग दो हजार छह सौ वर्ष पुराने सिद्धांत आज भी उतने ही प्रभावी और आवश्यक प्रतीत होते हैं। उनका संदेश केवल आध्यात्मिक उन्नति तक सीमित नहीं था, बल्कि वह एक संतुलित, शांत और नैतिक समाज की स्थापना का मार्ग भी दिखाता है।

भगवान महावीर ने पंचमहाव्रतों के माध्यम से जीवन को अनुशासित और सार्थक बनाने की दिशा प्रदान की। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह केवल धार्मिक नियम नहीं हैं, बल्कि जीवन के ऐसे आधार हैं जो व्यक्ति को भीतर से मजबूत और समाज को बाहर से स्थिर बनाते हैं।

अहिंसा का सिद्धांत आज के युग में सबसे अधिक प्रासंगिक है। आज विश्व के अनेक हिस्सों में संघर्ष और युद्ध की स्थितियां बनी हुई हैं। समाज में भी छोटी छोटी बातों पर हिंसा बढ़ती जा रही है। ऐसे में महावीर का संदेश कि किसी भी प्राणी को मन, वचन और कर्म से कष्ट न पहुंचाया जाए, अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है। अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं है, बल्कि यह विचारों और शब्दों में भी करुणा का समावेश है। यदि व्यक्ति अपने भीतर करुणा विकसित कर ले, तो समाज में शांति स्वतः स्थापित हो सकती है।

सत्य का पालन भी उतना ही आवश्यक है। आज के समय में झूठ, छल और स्वार्थ ने सामाजिक विश्वास को कमजोर किया है। महावीर ने सिखाया कि सत्य केवल बोलना ही नहीं, बल्कि ऐसा सत्य बोलना है जो हितकारी हो। सत्य का मार्ग कठिन अवश्य है, परंतु यही समाज को स्थिरता और विश्वास प्रदान करता है। जब व्यक्ति सत्य का अनुसरण करता है, तो उसके संबंध मजबूत होते हैं और समाज में पारदर्शिता बढ़ती है।

अचौर्य का सिद्धांत लालच पर नियंत्रण का मार्ग दिखाता है। आज उपभोग और प्रतिस्पर्धा की भावना ने व्यक्ति को अधिक से अधिक प्राप्त करने की दौड़ में लगा दिया है। इस दौड़ में कई बार वह अनुचित मार्ग अपना लेता है। महावीर का यह सिद्धांत सिखाता है कि जो हमारा नहीं है, उसे प्राप्त करने का प्रयास भी नहीं करना चाहिए। यह विचार समाज में ईमानदारी और संतोष की भावना को बढ़ाता है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल इंद्रिय संयम नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन और संतुलन बनाए रखना है। आज के तनावपूर्ण जीवन में मनुष्य अपनी इच्छाओं का दास बनता जा रहा है। परिणामस्वरूप मानसिक अशांति और असंतोष बढ़ता है। यदि व्यक्ति अपने मन और इंद्रियों पर नियंत्रण रखे, तो वह मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त कर सकता है। यही संयम उसे सही निर्णय लेने में भी सहायता करता है।

अपरिग्रह का सिद्धांत आज के समय में सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध होता है। वर्तमान युग में उपभोग और संग्रह की प्रवृत्ति ने प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाल दिया है। पर्यावरण संकट, जल की कमी और प्रदूषण इसी का परिणाम हैं। महावीर ने सिखाया कि आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना चाहिए। यदि मनुष्य इस सिद्धांत को अपनाए, तो न केवल पर्यावरण की रक्षा संभव है, बल्कि समाज में संसाधनों का समान वितरण भी सुनिश्चित हो सकता है।

महावीर का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत अनेकांत दर्शन है। इसका अर्थ है कि सत्य के अनेक पक्ष होते हैं। आज के समय में वैचारिक असहिष्णुता बढ़ती जा रही है। लोग अपने विचारों को ही अंतिम सत्य मानते हैं और दूसरों के विचारों को स्वीकार नहीं करते। इससे समाज में विभाजन और संघर्ष बढ़ता है। अनेकांत का सिद्धांत सिखाता है कि हर व्यक्ति का दृष्टिकोण अलग हो सकता है और उसे समझने का प्रयास करना चाहिए। यह विचार सहिष्णुता और संवाद की संस्कृति को बढ़ावा देता है।

महावीर का संदेश जियो और जीने दो आज भी उतना ही सार्थक है। यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की संपूर्ण दिशा है। यदि हर व्यक्ति इस सिद्धांत को अपनाए, तो समाज में नफरत और हिंसा का स्थान प्रेम और सहअस्तित्व ले सकता है। यह संदेश हमें सिखाता है कि हम अपने अधिकारों के साथ दूसरों के अधिकारों का भी सम्मान करें। जैन धर्म की साधना पद्धति भी आज के समय में अत्यंत उपयोगी है। सामयिक का अभ्यास व्यक्ति को वर्तमान में जीना सिखाता है। इससे मन की चंचलता कम होती है और ध्यान केंद्रित होता है। प्रतिक्रमण आत्मविश्लेषण का माध्यम है। इसमें व्यक्ति अपने द्वारा किए गए गलत कार्यों पर विचार करता है और उन्हें सुधारने का संकल्प लेता है। इससे आत्मशुद्धि होती है और व्यक्ति बेहतर बनने की दिशा में अग्रसर होता है।

उपवास का महत्व भी केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है। यह शरीर और मन दोनों को शुद्ध करता है। उपवास से शरीर को विश्राम मिलता है और मन में अनुशासन आता है। इससे इच्छाओं पर नियंत्रण बढ़ता है और व्यक्ति आत्मसंयम की ओर अग्रसर होता है। आज के समय में जब अनियमित जीवनशैली के कारण अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं, उपवास का अभ्यास स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

महावीर ने समानता का भी संदेश दिया। उन्होंने जाति, धर्म और लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध किया। आज के समाज में भी भेदभाव की समस्याएं बनी हुई हैं। ऐसे में उनका यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है कि सभी जीव समान हैं और सभी को समान अधिकार मिलना चाहिए। यह दृष्टिकोण समाज में न्याय और समरसता स्थापित करने में सहायक होता है।

यदि हम आज के समाज की स्थिति पर विचार करें, तो स्पष्ट होता है कि महावीर के सिद्धांत केवल आदर्श नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुके हैं। हिंसा, तनाव, पर्यावरण संकट और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं का समाधान उनके विचारों में निहित है। उनके सिद्धांत व्यक्ति को भीतर से बदलने का आह्वान करते हैं, क्योंकि जब व्यक्ति बदलता है, तभी समाज बदलता है।

मेरे विचार से महावीर की शिक्षाएं केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उन्हें दैनिक जीवन में अपनाया जाना चाहिए। यदि व्यक्ति अपने व्यवहार में अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह को स्थान दे, तो उसका जीवन स्वयं ही संतुलित और सुखी बन सकता है। यह परिवर्तन धीरे धीरे समाज में भी दिखाई देगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भगवान महावीर के सिद्धांत कालातीत हैं। वे किसी एक युग या समाज के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए हैं। आज जब दुनिया अनेक संकटों से जूझ रही है, उनके विचार एक प्रकाश स्तंभ की तरह मार्गदर्शन करते हैं। यदि हम उनके संदेश को समझकर उसे अपने जीवन में उतारें, तो एक शांत, संतुलित और समृद्ध समाज की स्थापना संभव है।

कांतिलाल मांडोत

अनुभवी शिक्षकों की गरिमा का प्रश्न- टीईटी परीक्षा ?

देश की शिक्षा व्यवस्था आज एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय के बाद देशभर के सरकारी स्कूलों में वर्षों से सेवाएं दे रहे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक मानसिक दबाव और असमंजस की स्थिति में हैं। इस निर्णय के अनुसार अब ऐसे शिक्षकों के लिए भी शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) उत्तीर्ण करना अनिवार्य कर दिया गया है, जो पिछले दो से तीन दशकों से शिक्षण कार्य कर रहे हैं। निस्संदेह, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के लागू होने के बाद शिक्षकों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु टीईटी जैसी परीक्षा का प्रावधान एक सकारात्मक कदम था। इससे नई भर्ती होने वाले शिक्षकों की योग्यता और दक्षता का मानकीकरण संभव हुआ है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या यह प्रावधान उन शिक्षकों पर भी समान रूप से लागू किया जाना चाहिए, जिन्होंने 2009 से पहले राज्य सरकारों की नीतियों के तहत विधिवत नियुक्ति प्राप्त की थी और वर्षों से शिक्षा क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं? ये वे शिक्षक हैं जिन्होंने सीमित संसाधनों और अनेक चुनौतियों के बावजूद न केवल विद्यार्थियों को शिक्षित किया, बल्कि बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम भी दिए और शिक्षा के नए आयाम स्थापित किए। ऐसे में उनके अनुभव और योगदान को नजरअंदाज करते हुए उन्हें पुनः परीक्षा देने के लिए बाध्य करना उनकी गरिमा और आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने जैसा प्रतीत होता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि अन्य प्रतिष्ठित सेवाओं–जैसे प्रशासनिक, चिकित्सा या इंजीनियरिंग–में कार्यरत अधिकारियों से वर्षों की सेवा के बाद पुनः मूल पात्रता परीक्षा देने की अपेक्षा नहीं की जाती। ऐसे में शिक्षकों के साथ इस प्रकार का व्यवहार एक असमान दृष्टिकोण को दर्शाता है। हालांकि न्यायालय के निर्णय में यह प्रावधान रखा गया है कि जिन शिक्षकों की सेवा अवधि पाँच वर्ष से कम शेष है, उन्हें इस परीक्षा से छूट दी गई है। फिर भी बड़ी संख्या में ऐसे शिक्षक हैं जिनके सामने यह अनिवार्यता एक गंभीर चिंता का विषय बन चुकी है। परीक्षा में असफल होने की स्थिति में नौकरी पर संकट की आशंका उन्हें मानसिक रूप से प्रभावित कर रही है। यह आवश्यक है कि इस विषय पर संवेदनशीलता के साथ विचार किया जाए। पदोन्नति के लिए योग्यता आधारित परीक्षाओं का प्रावधान स्वागत योग्य है और इससे प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि हो सकती है। किंतु वर्षों से कार्यरत शिक्षकों के लिए ऐसी परीक्षा को अनिवार्य बनाकर उनकी नौकरी को जोखिम में डालना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। अतः केंद्र सरकार से अपेक्षा है कि वह इस विषय में सकारात्मक पहल करे। चाहे पुनर्विचार याचिका के माध्यम से या फिर संसद में आवश्यक संशोधन लाकर, ऐसे शिक्षकों को टीईटी की अनिवार्यता से राहत प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त किया जाए। यह न केवल शिक्षकों के सम्मान की रक्षा करेगा, बल्कि शिक्षा व्यवस्था में स्थिरता और विश्वास भी बनाए रखेगा। अंततः, यह केवल एक परीक्षा का विषय नहीं है, बल्कि उन लाखों शिक्षकों के आत्मसम्मान और उनके वर्षों के समर्पण की पहचान का प्रश्न है, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अरविंद रावल

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254, E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

भव्य दुर्गा जागरण व माता की चौकी

बिसवां (सीतापुर) एकादशी के पावन अवसर पर ब्राह्मणी टोला मोहल्ले में महिला जागरण समिति के तत्वावधान में मां दुर्गा का भव्य जागरण कार्यक्रम एवं माता की चौकी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विधि-विधान से मां दुर्गा के पूजन-अर्चन और माता की चौकी के साथ हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पूजन के उपरांत भजनों की मधुर श्रृंखला प्रारंभ हुई, जिसमें लखनऊ से आई प्रसिद्ध भजन गायिका सरस्वती मिश्रा एवं बंदना शुक्ला ने अपने सुरों से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनके भजनों पर उपस्थित श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूम उठे। देर रात तक चले इस भक्ति कार्यक्रम में महिलाओं की विशेष भागीदारी रही। बड़ी संख्या में श्रद्धालु महिलाओं ने उपस्थित होकर भक्ति रस का आनंद लिया। पूरे माहौल में श्रद्धा, आस्था और उत्साह का अद्भुत संगम देखने को मिला।

करंट की चपेट में आकर श्रमिक की मौत

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के सुहाईबाग मोहल्ला में रविवार को भवन में काम कर रहा श्रमिक करंट की चपेट में आ गया। इससे उसकी दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के बाद परिवार में मातम पसर गया है। कुम्भडौरा गांव निवासी विजय कुमार (50) पुत्र राम अवतार सुहाई बाग मोहल्ला में निर्माणाधीन भवन की छत पर काम कर रहे थे। तभी कंक्रीट से भरा हुआ तसला छत के ऊपर से जा रही 11 केवी लाइन से छू गया। करंट लगते ही वह बुरी तरह से झूलस गए। साथ ही तेज झटके के साथ वह बगल के खेत में नीचे जा गिरे। साथी श्रमिकों ने फौरन उन्हें इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने परीक्षण के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। हादसे के बाद पत्नी ज्ञानवती बड़े बेटे रोहित व मोहित सहित परिवारीजनों का रो-रो कर बुरा हाल बना हुआ है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि पंचायतनामा कराकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

नशीला पदार्थ खिलाकर दुष्कर्म तथा ब्लैकमेल करने के मामले में मुकदमा दर्ज

सुरेंद्र सिंघल, तिलहर। कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर दुष्कर्म करने तथा वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने के मामले में पुलिस ने एक युवक पर मुकदमा दर्ज किया है। नगर की एक महिला ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसका अपने पति से काफी समय से विवाद चल रहा है इसी दौरान उसकी जान पहचान गुड़गांव कॉलोनी निवासी एक युवक से हो गई और वह उसके घर आने जाने लगा। आप है कि लगभग छः माह पूर्व युवक ने कोल्ड ड्रिंक पर नशीला पदार्थ मिलाकर उसे पिला दिया जिससे मैं बेहोश हो गई बेहोशी की अवस्था में युवक ने उसके साथ दुष्कर्म करके उसकी वीडियो बना ली और बाद में वीडियो दिखाकर लगातार उसे ब्लैकमेल करता रहा। महिला ने युवक पर अपने साथियों के साथ मिलकर दुष्कर्म करने का भी आरोप लगाया है। प्रभारी निरीक्षक गूगल किशन पाल ने बताया कि मामले की कविता को देखते हुए आरोपित के विरुद्ध संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। और आरोपित की तलाश में पुलिस की दो टीमें लगाई गई है।

सूचना

मेरे पुत्र के आधार कार्ड पर त्रुटिवश घरेलू नाम अनुरूप व जन्म तिथि 08.09.2015 गलत अंकित हो गयी है, जबकि जन्म प्रमाण पत्र में उसका नाम भास्कर यादव और जन्म तिथि 08.09.2016 है, जो सत्य है, अतः उसका नाम जन्म प्रमाण पत्र के अनुसार भास्कर यादव व जन्म तिथि 08.09.2016 ही पढ़ी और जानी जाए।

शिवकुमार पुत्र रामसिंह ग्राम खरसठ मजरे किशुनपुर तहसील महमूदाबाद (सीतापुर)

राजकीय महिला महाविद्यालय मे फातिमा शेख के जीवन एवं शिक्षा मे योगदान पर राष्ट्रीय सेमिनार सम्पन्न

● बालिका शिक्षा, समान अवसर और सामाजिक जागरूकता पर विशेषज्ञों ने रखे विचार

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर(ब्यूरो) स्थानीय राजकीय महिला महाविद्यालय में फातिमा शेख के जीवन एवं शिक्षा में योगदान कर दीजिए विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश उर्दू एकेडमी के सहयोग से भारत एजुकेशनल वेलफेयर ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ, जिसमें शिक्षा, समाज सुधार और महिला सशक्तिकरण पर व्यापक चर्चा की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शफात हुसैन (निदेशक, उ.प्र. वक्फ विकास निगम, लखनऊ) ने अपने संबोधन में बालिका शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज के समग्र विकास के लिए महिलाओं का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आलमीन अली ने की, जिन्होंने फातिमा शेख के संघर्षपूर्ण जीवन और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को प्रेरणास्रोत बताया। सेमिनार के समन्वयक इंजीनियर मो. अनीस (निदेशक, तकनीकी शिक्षा विकास एवं जनकल्याण संस्थान, लखनऊ) ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की, जबकि आयोजन सचिव प्रो. अमिय कुमार एवं संरक्षक प्राचार्या प्रो. कामिनी वर्मा ने छात्राओं को फातिमा शेख के ऐतिहासिक योगदान से अवगत कराया और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. रजनी कांत (प्राचार्य, आरएमपी पीजी कॉलेज, सीतापुर) एवं डॉ. राजीव द्विवेदी (प्राचार्य, डीडीयू राजकीय पीजी कॉलेज, सीतापुर) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा ही समाज में समानता और जागरूकता का सबसे सशक्त माध्यम है। मुख्य वक्ताओं के रूप में डॉ. कीर्ति शर्मा, डॉ. दाऊद अहमद, डॉ. शिशिर श्रीवास्तव, प्रो. कल्पना सिंह, डॉ. अजीत यादव, डॉ. कुलदीप कुमार, डॉ. नीलम यादव तथा डॉ. शालिनी चौधरी ने अपने व्याख्यानों के माध्यम से फातिमा शेख के योगदान, महिला शिक्षा की चुनौतियों और वर्तमान परिदृश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला, जिससे छात्राओं व प्रतिभागियों में नई ऊर्जा और जागरूकता का संचार हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. हरिकेश द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन इंजीनियर मो. अनीस ने प्रस्तुत किया। सेमिनार में बड़ी संख्या में छात्राओं, शिक्षकों एवं बुद्धिजीवियों की उपस्थिति रही, जिससे कार्यक्रम अत्यंत सफल और सार्थक रहा।

बेटी हर्षदीप का ऑल इंडिया पावरलिफ्टिंग प्रोग्राम में चयन, जिले का बढ़ाया मान

● परसेंडी के उल्जापुर गांव की प्रतिभा ने लखनऊ ट्रायल में किया शानदार प्रदर्शन, परिवार व क्षेत्र में खुशी की लहर

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर (ब्यूरो)। जनपद की होनहार बेटी हर्षदीप कौर ने अपनी मेहनत और लगन के दम पर एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर जिले का नाम रोशन किया है। विकास खण्ड परसेंडी की ग्राम पंचायत उल्जापुर की मूल निवासी है वर्तमान समय मे गुरुनानक कालोनी में रह रही है एवं दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज की छात्रा हर्षदीप कौर का चयन यूनिवर्सिटी ऑफ लखनऊ में आयोजित पावरलिफ्टिंग ट्रायल के आधार पर ऑल इंडिया पावरलिफ्टिंग प्रोग्राम के लिए हुआ है। 28 मार्च को आयोजित इस ट्रायल में अंडर-63 किलो ग्राम वर्ग में हर्षदीप कौर ने स्क्वाट, बेंच प्रेस और डेडलिफ्ट में शानदार प्रदर्शन करते हुए चयनकर्ताओं को प्रभावित किया। उनके इस दमदार प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया कि छोटे गांवों की बेटियां भी बड़े मंच पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा सकती हैं। ट्रायल का संचालन अनूप सर द्वारा किया गया, जबकि हर्षदीप को कोच जाकिर सर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनकी सफलता के पीछे उनके माता-पिता का भी अहम योगदान रहा है। पिता राजविंदर सिंह और माता कवलजीत कौर ने हर कदम पर उनका हौसला बढ़ाया, जिसका परिणाम आज पूरे जिले के सामने है। हर्षदीप की इस उपलब्धि से न सिर्फ उनके परिवार बल्कि पूरे क्षेत्र में खुशी और गर्व का माहौल है। ग्रामीणों और कॉलेज परिवार ने इसे जिले की बेटियों के लिए प्रेरणा बताया है। यह सफलता उन तमाम बेटियों के लिए एक संदेश है कि अगर मेहनत और आत्मविश्वास हो तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं।

गंगा एक्सप्रेसवे सर्विस रोड पर कार की टककर से चाचा भतीजा घायल

लालगंज (रायबरेली)। गंगा एक्सप्रेसवे की सर्विस रोड पर रविवार को तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार चाचा भतीजे को टक्कर मार दी। हादसे में दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना कोतवाली क्षेत्र के उगाभाद गांव के पास की है। बैसन का पुरवा मजरे बरी गांव निवासी रामसेवक (58) अपने भतीजे धीरज (24) के साथ बाइक से दवा लेकर घर लौट रहे थे। तभी सामने से आ रही बेकाबू कार ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। वहा मौजूद राहगीरों ने एंबुलेंस को सूचना दी और दोनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने पर उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

मरम्मत के बाद खुला रेलवे ओवरब्रिज, लोगों को मिली जाम से राहत

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज (रायबरेली)। बांदा-टांडा राष्ट्रीय राजमार्ग 232 के बाईपास पर स्थित रेलवे ओवरब्रिज शनिवार शाम आखिरकार आवागमन के लिए खोल दिया गया। देर शाम बैरिकेड हटते ही वाहनों की आवाजाही शुरू हो गई, जिससे लोगों ने राहत की सांस ली। ओवरब्रिज बंद होने के कारण नगर में जाम की समस्या गंभीर हो गई थी। भारी वाहन कस्बे के भीतर से गुजर रहे थे, जिससे व्यापार और स्कूल समय में हालात और खराब हो जाते थे। रोजाना लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था।

दरअसल, पुल के मुख्य हिस्से में दो स्थानों पर कंक्रीट धंसने की शिकायत मिलने के बाद इसे बंद कर मरम्मत कार्य शुरू कराया गया था। सुरक्षा के लिहाज से दोनों ओर सीमेंट के गर्डर रखकर रास्ता पूरी तरह बंद कर दिया गया था और 2 जनवरी से आवागमन रोक दिया गया था। मरम्मत के दौरान क्षतिग्रस्त स्लैब को तोड़कर नया स्लैब डाला गया। इसके बाद स्लैब के मजबूत होने पर डामरीकरण का कार्य पूरा किया गया। शनिवार को सभी कार्य पूर्ण होने के बाद ओवरब्रिज को खोल दिया गया।

गौरतलब है कि यह ओवरब्रिज वर्ष 2018 में बनकर तैयार हुआ था, जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। हालांकि, निर्माण के छह माह के भीतर ही पुल क्षतिग्रस्त हो गया और वर्ष 2019 में इसे बंद करना पड़ा। करीब छह साल बाद मरम्मत के बाद इसे फिर खोला गया, लेकिन कुछ ही दिनों में दोबारा कंक्रीट धंसने की समस्या सामने आ गई। अस्थायी मरम्मत के सहारे यातायात चालू रखा गया, लेकिन अंततः 2 जनवरी को इसे पूरी तरह बंद करना पड़ा। निर्माण इकाई के प्रोजेक्ट मैनेजर विवेक वर्मा के अनुसार, अब मरम्मत कार्य पूरी तरह से पूरा हो चुका है और ओवरब्रिज सुरक्षित है। ओवरब्रिज के दोबारा खुलने से स्थानीय लोगों और व्यापारियों में खुशी का माहौल है। व्यापार मंडल के लोगों का कहना है कि अब जाम से राहत मिलेगी और बाजार की रफ्तार फिर से सामान्य हो सकेगी।

बीएलपीएस में धूमधाम से मनाया गया वार्षिक परीक्षाफल वितरण एवं सम्मान समारोह

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज(रायबरेली) सरेनी।क्षेत्र के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान बृजलाल यादव मेमोरियल पब्लिक स्कूल बेनी माधवगंज में रविवार को वार्षिक परीक्षाफल वितरण एवं सम्मान समारोह बड़े ही उत्साह और धूमधाम के साथ आयोजित किया गया।कार्यक्रम में विद्यार्थियों की प्रतिभा,अनुशासन और सांस्कृतिक समृद्धि का अद्भुत संगम देखने को मिला।कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय खो-खो रेफरी सत्य प्रकाश तिवारी एवं विद्यालय के प्रबंधक डॉ. सुशील यादव द्वारा दीप प्रज्वलन और मां सरस्वती के पूजन के साथ हुआ।प्रधानाचार्य पवन कुमार ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर गर्मजोशी से स्वागत किया।कार्यक्रम की शुरुआत नन्हे-मुन्ने बच्चों के मनमोहक स्वागत गीत से हुई।इसके बाद विद्यार्थियों ने नृत्य,गीत और लघु नाटिकाओं के माध्यम से रंगारंग प्रस्तुतियां देकर सभी का दिल जीत लिया।दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से बच्चों का उत्साहवर्धन किया।मुख्य अतिथि सत्य प्रकाश तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं,बल्कि संस्कार,खेल और अनुशासन भी आवश्यक हैं। उन्होंने खेलों को आत्मविश्वास,नेतृत्व क्षमता और टीम भावना विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बताया।साथ ही अपने प्रेरणादायक संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों के लिए केवल किताबों की शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है बल्कि सर्वांगीण विकास के लिए खेल भी बेहद जरूरी है।उन्होंने विद्यालय की सराहना करते हुए कहा कि यहां शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है,जो बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।प्रधानाचार्य पवन कुमार ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में अभिभावकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक और अभिभावक मिलकर बच्चों का सही मार्गदर्शन करें तो हर विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।उन्होंने बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए निरंतर मेहनत और अनुशासन का संदेश दिया।विद्यालय के प्रबंधक डॉ. सुशील यादव ने सभी अतिथियों और अभिभावकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि विद्यालय आधुनिक तकनीकों और नवाचारों के माध्यम से शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।उन्होंने कहा कि संस्था का उद्देश्य प्रत्येक बच्चे की प्रतिभा को पहचानकर उसे निखारना है।उन्होंने कहा कि विद्यालय का उद्देश्य केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है बल्कि प्रत्येक बच्चे की छिपी हुई प्रतिभा को पहचानकर उसे निखरना है।उन्होंने भरोसा दिलाया कि भविष्य में भी विद्यालय इसी तरह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा।कार्यक्रम के अंत में मेधावी छात्र-छात्राओं को मेडल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।साथ ही शत-प्रतिशत उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों सहित विशेष सम्मान दिया गया, जिससे अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिली।कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका साक्षी सिंह एवं शिक्षक गजेन्द्र प्रताप सिंह ने संयुक्त रूप से किया।इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं-प्रीति, शिखा सिंह, सरिता सिंह, प्रियंका श्रीवास्तव, जावित्री, श्रद्धा तिवारी, आरती, नेहा यादव, रितू, शिवानी, विनम्रता यादव, सारिका, मदन सिंह, अभिषेक श्रीवास्तव, जावेद, हसमत, शशी, राजेश सिंह, विजय प्रताप सिंह, वीरेंद्र विक्रम पटेल, श्याम बाबू, इमरान, हेमंत, अनुभव मिश्रा, ओंकार यादव एवं राष्ट्रीय कवि डॉ गोविन्द गजब सहित सैकड़ों गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अंधेरे में गांव, नया ट्रांसफार्मर भी लगते ही फुंका

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के सरैला गांव में ट्रांसफार्मर जलने से पिछले 15 दिनों से बिजली आपूर्ति ठप है, जिससे करीब 70 घर प्रभावित हैं। ग्रामीणों की शिकायत पर शनिवार को नया ट्रांसफार्मर लगाया गया, लेकिन लगते ही वह भी फुंक गया। बिजली न होने से गांव में अंधेरा पसरा है और पेयजल संकट भी गहरा गया है। वहीं बच्चों की पढ़ाई पर भी असर पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि 15 दिन पहले ट्रांसफार्मर जलने के बाद कई बार विभाग को सूचना दी गई, लेकिन समय पर समाधान नहीं हुआ। शनिवार को लाइनमैन द्वारा लगाया गया नया ट्रांसफार्मर भी तुरंत फुंक जाने से लोगों में नाराजगी बढ़ गई है। गांव के छेदीलाल, सुन्दर, रामबिलास, छोटेलाल, शिवदर्शन, कन्हैया, संतोष और होरीलाल ने ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ाकर नया ट्रांसफार्मर लगाने की मांग की है। अवर अभियंता (ग्रामीण) बृजेश कुमार ने बताया कि जल्द ही नया ट्रांसफार्मर लगाकर विद्युत आपूर्ति बहाल कर दी जाएगी।

अम्बेडकर नगर के मुकदमे को लेकर अधिवक्ताओं में रोष, निष्पक्ष जांच की उठी मांग

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में अधिवक्ताओं के बीच एक मामले को लेकर खासा आक्रोश देखने को मिल रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अधिवक्ता अस्मिता पाण्डेय, निवासी 5/1 मालवीय नगर, लखनऊ द्वारा एक शिकायती प्रार्थना पत्र लखनऊ बार एसोसिएशन को प्रेषित किया गया है, जिसमें गंभीर आरोप लगाए गए हैं। प्रार्थना पत्र में उल्लेख किया गया है कि जनपद अम्बेडकर नगर के थाना महारूआ में दर्ज मुकदमा अपराध संख्या-52/2026 में उनके पति अधिवक्ता प्रभात शुक्ला के विरुद्ध गलत प्रथम सूचना रिपोर्ट (FIR) दर्ज कराई गई है। शिकायत के अनुसार घटना के समय प्रभात शुक्ला एवं सर्वेश शुक्ला लखनऊ स्थित अपने आवास पर मौजूद थे, इसके बावजूद उन्हें मामले में नामजद किया गया है।

इस प्रकरण को लेकर अधिवक्ताओं में गहरा रोष व्याप्त है। अधिवक्ताओं का कहना है कि बिना उचित साक्ष्य के इस प्रकार किसी अधिवक्ता को फंसाना न्याय व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। लखनऊ बार एसोसिएशन को प्राप्त इस शिकायत पत्र की मूल प्रति उच्चाधिकारियों को निष्पक्ष जांच और त्वरित कार्रवाई के लिए प्रेषित कर दी गई है। अधिवक्ताओं ने मांग की है कि पूरे मामले की निष्पक्ष एवं पारदर्शी जांच कराई जाए, ताकि सत्य सामने आ सके और निर्दोष को न्याय मिल सके।

लखनऊ पुलिस मित्र परिवार एवं इस वेलफेयर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में आज दिनांक 29 मार्च 2026 को राज नारायण लोक बंधु संयुक्त चिकित्सालय मे लखनऊ पुलिस मित्र परिवार एवं ईश वेलफेयर फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वधान मे स्वैच्छिक रक्तदान सिविर का आयोजन किया गया। शिविर मे करीब 70 से अधिक समाज सेवियों एवं युवाओं ने सहभागिता की, जिसमें 43 रक्तदाताओं व रक्त वीरांगनाओं ने बढ़ चढ़कर रक्तदान किया। यह शिविर लखनऊ पुलिस मित्र परिवार के संरक्षक कविंद्र प्रताप सिंह की संरक्षता एवं शिविर के आयोजक/संस्थापक जितेंद्र सिंह, फाउंडर मेम्बर सरिता सिंह, फाउंडर मेंबर/सेक्टर वार्डन सिविल डिफेंस-ज्योति खरे, फाउंडर मेम्बर नूतन वर्मा, फाउंडर मेंबर प्रशांत बाजपेई फाउंडर मेंबर अश्वनी कुमार, प्रशांत तिवारी, पवन सिंह, सुजीत पटेल, अनुज श्रीवास्तव, चंद्र शेखर सिंह एडवोकेट रिचा मिश्रा, बी0के0 सिन्हा (सीनियर मैनेजर ड्रुश्ड्रु), धीरेंद्र मिश्रा, रुचि मिश्रा, सुधा टंडन सहित बहुत सारे सहयोगियों के अथक प्रयास से सफल बनाया गया। रक्तदान शिविर के विशिष्ट अतिथि चिकित्सा अधीक्षक डॉ0 अजय शंकर तिवारी, एचओडी ब्लड बैंक डॉ0 पी0सी0 तिवारी, डॉ0 प्रकाश उपाध्याय लोक बंधु, डॉ0 धर्मेंद्र शर्मा रहे, जिन्होंने रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि आपका यह रक्तदान मानवता और सेवा की भावना को सशक्त बनाता है। कैंप को अपने मधुर गीत और संचालन से पवन सिंह ने सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। स्वैच्छिक रक्तदान सिविर के प्रथम रक्तदाता दिव्यांश सिंह, दितीया रक्त दाता यश्वीर और द्वितीय रक्त तृतीय रक्तदाता विरेश सिंह रहे। शिविर को सफल बनाने मे पावन पांडेय (गुरु), मनोज कुमार वर्मा एडीसी सिविल डिफेंस, शैल वर्मा, शिप्रा सिंह, संध्या यादव, राम मिलन यादव, संगीता एवं मीडिया बंधु सहित बहुत सारे सम्मानित ब्लड बैंक टीम का काफी सहयोग रहा। इस अवसर पर निर्मला मिश्रा अध्यक्ष निर्मल एजुकेशन एवं वेल्फयर सोसायटी, शिप्रा सिंह अध्यक्ष रुझान फाउंडेशन सहित विभिन्न सामाजिक संगठनो के प्रतिनिधियों एवं गणमान्या व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति एं रक्तदान मे विशेष सहयोग रहा।

यह केंद्र लोगों को तनाव, क्लेश, डिप्रेशन व अन्य सामाजिक समस्याओं से मुक्ति दिलाने में सहायक होगाः-ब्रह्माकुमारी सुमन

स्वतंत्र प्रभात

बिसवां/सीतापुर कस्बे के गोपाल नगर बेलझरिया में ब्रह्माकुमारी जी के राजयोग सेवा केंद्र आत्म अनुभूति भवन का लोकार्पण अहमदाबाद (गुजरात) की सब जोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चंद्रिका दीदी व क्षेत्रीय विधायक निर्मल वर्मा ने संयुक्त रूप से किया।

इस अवसर पर लखनऊ सब जोन इंचार्ज राजयोगिनी राधा दीदी, राजयोगिनी मंजू दीदी, जानकीपुरम सेवा केंद्र इंचार्ज ब्रह्माकुमारी सुमन दीदी उपस्थित रहीं। ब्रह्माकुमारी चंद्रिका दीदी ने संस्था के आध्यात्मिक उद्देश्य बताते हुए कहा कि यह केंद्र लोगों को तनाव, कलेश, डिप्रेशन व अन्य सामाजिक समस्याओं से मुक्ति दिलाने में सहायक होगा। मुख्य अतिथि विधायक निर्मल वर्मा ने सेवा केंद्र के सफल संचालन की कामना करते हुए सेवा केंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी नंदिनी बहन व ब्रह्माकुमारी शिप्रा बहन को बधाई दी। कार्यक्रम में पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष सीमा राजू जैन, शहर जिला प्रचारक विकल्प मोहित बौद्ध सहित अन्य लोगों ने शुभकामनाएं दीं। अंत में ब्रह्माकुमारी नंदिनी बहन ने सभी अतिथियों, सहयोगियों व नगरवासियों का आभार व्यक्त किया।

इस दौरान प्रमिला गुप्ता, राजरानी गुप्ता, नारायण अग्रवाल, निर्मला, अभिषेक गुप्ता सहित बड़ी संख्या में महिलाएं व पुरुष उपस्थित रहे।

लखनऊ में पेट्रोल-डीजल से लोगों को राहत, घरेलू सिलिंडर की डिलीवरी में लंबी वेटिंग बरकरार

लखनऊ। राजधानी में पेट्रोल-डीजल से लोगों को पूरी तरह से फिलहाल राहत मिल गई है। पेट्रोल पंपों पर लाइनें नहीं लग रही है। कई पंपों पर तो रविवार की दोपहर सन्नाटा भी रहा। पंप संचालकों के मुताबिक लोगों ने पर्याप्त मात्रा में अपने वाहनों में डीजल व पेट्रोल डलवा लिया है, इसलिए अब मारामारी बिल्कुल खत्म हो गई है। वहीं, कमर्शियल सिलिंडर को लेकर संकट बना हुआ है। होटल, रेस्तरां व ढाबों के संचालकों को भट्ठियों पर काम करना पड़ रहा है। उधर, गोमती नगर विस्तार स्थित सीमा गैस एजेंसी घरेलू सिलिंडर की डिलिवरी नहीं कर पा रहा है। 15 मार्च की पेंडेंसी अभी तक पूरी नहीं हो पायी है। सैकड़ों उपभोक्ता सीमा गैस एजेंसी के चक्कर लगाने को विवश हैं। यही स्थिति कई गैस एजेंसी की राजधानी में बनी हुई है। आलमबाग पेट्रोल पंपों पर कार्यरत कर्मियों ने बताया कि पेट्रोल और डीजल पर्याप्त मात्रा में हैं। तेल लेने आए राजेश यादव ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से भीड़ थी, आज तक कोई लाइन ही नहीं है। आसानी से पेट्रोल मिल रहा है।

कलश यात्रा के साथ छमनी खेड़ा में शुरू हुई श्रीमद्भागवत कथा

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के छमनी खेड़ा गांव में रविवार को श्रद्धा और आस्था के बीच श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ हुआ। कथा से पहले भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गई। इसमें गांव की महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पीली पोशाक में सजे श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बन रहा था।

शोभायात्रा गांव से शुरू होकर बाबा सहोलेश्वर धाम पहुंची। वहां पूजा-अर्चना के बाद यात्रा गांव के विभिन्न देवस्थानों से होती हुई कथा स्थल पर संपन्न हुई। पूरे मार्ग में भक्ति गीतों और जयकारों से माहौल भक्तिमय बना रहा। पहले दिन कथा व्यास पंडित बृजनंदन शास्त्री ने श्रीमद्भागवत कथा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कथा का श्रवण मात्र से मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं।

यह ग्रंथ केवल धार्मिक नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाला है। इससे व्यक्ति को सही मार्ग और सच्चे आचरण की प्रेरणा मिलती है। कथा स्थल पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। सभी ने भक्ति भाव से कथा का श्रवण किया। आयोजन समिति के सदस्यों ने व्यवस्था संभाली। इस मौके पर चंद्र मोहन त्रिपाठी, बृजमोहन त्रिपाठी, रज्जन तिवारी, सत्यम त्रिपाठी, आनंद तिवारी, दुर्गा शंकर तिवारी, राजेंद्र दीक्षित, झब्बू भैया, मीनू त्रिपाठी, रुचि, प्राची, अंशिका और भूमिका सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

यूपी के हर स्कूल में शक्ति मंच का गठन, नए सत्र से होगी नियमित बैठक, दिशा-निर्देश जारी

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। नए शैक्षणिक सत्र से प्रदेश के सभी माध्यमिक विद्यालयों में बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए मिशन शक्ति' अभियान के तहत शक्ति मंच का गठन किया जाएगा। हर विद्यालय में यह मंच सक्रिय रहेगा और इसकी नियमित बैठकें आयोजित की जाएंगी। इन बैठकों में छात्र-छात्राएं सृजनात्मक तरीकों जैसे लेखन, वाद-विवाद, चित्रकला, नाटक, गीत और कहानियों के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करेंगे। खास तौर पर उन बालिकाओं की पहचान की जाएगी, जिनका अभी तक स्कूल में नामांकन नहीं हुआ है। साथ ही, उनके स्कूल न आने के कारणों को समझकर उनका दाखिला कराने में मदद की जाएगी। विद्यालयों में बालिकाओं को आने वाली समस्याओं पर खुलकर चर्चा होगी और उनके समाधान की योजना भी बनाई जाएगी। बाल एवं महिला अधिकार, लड़कियों की शिक्षा का महत्व और समाज में मौजूद कुरीतियों पर भी जागरूकता बढ़ाई जाएगी। किशोरावस्था से जुड़ी शंकाओं का समाधान किया जाएगा और आत्मरक्षा के उपायों का अभ्यास भी कराया जाएगा। इसके अलावा, बच्चों को अपनी शिकायतें लिखकर शिकायत पेटिका में डालने के लिए प्रेरित किया जाएगा। माध्यमिक शिक्षा निदेशक महेंद्र देव का कहना है कि मिशन शक्ति को शैक्षणिक कैलेंडर में भी शामिल करते हुए विद्यालयों के लिए दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। इसके तहत हर महीने के अंतिम शनिवार को स्कूल प्रबंधन समिति की महिला सदस्य इन शिकायतों को पढ़कर समाधान सुनिश्चित करेंगी। बच्चों को सुरक्षा से जुड़ी हेल्पलाइन नंबर 1098 की जानकारी दी जाएगी और इसे स्कूल में प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किया जाएगा। छात्राओं को सुरक्षित पीरियड्स और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में जागरूक करने के लिए साल में दो बार कार्यक्रम होंगे। जरूरत पड़ने पर स्कूल में सैनिटरी नैपकिन उपलब्ध कराए जाएंगे।

संक्षिप्त खबरें

अलीगढ़ में पथरी के ऑपरेशन से पहले ही मरीज की अस्पताल में मौत, हत्या का आरोप लगाकर परिजनों ने किया हंगामा

अलीगढ़। हंसते-मुस्कराते हुए पथरी का ऑपरेशन कराने के लिए ऑपरेशन थिएटर में गई शिक्षिका शाइस्ता जिंदा नहीं लौट सकीं। ऑपरेशन करने वाली टीम में भगदड़ मचने पर तीमारदारों ने उनका हाल जाना तो बताया गया कि मरीज को हार्ट अटैक आ गया है। इसके कुछ देर बाद ही डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। मरीज की मृत्यु से गुस्साए स्वजन ने डॉक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा कर दिया। स्वजन का आरोप है कि अधिक एनेस्थीसिया देने से मरीज की हालत बिगड़ी। स्वजन की तहरीर पर क्वार्सी पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। जिसमें मौत का कारण बीपी कम होने और आर्ट अटैक से कारण बताया गया है। बिसरा भी प्रिजर्व किया है। ऊपर कोट निवासी शाइस्ता इशताक अलीगढ़ पब्लिक स्कूल में अंग्रेजी की शिक्षिका थीं। काफी दिनों से वह पित्ताशय में पथरी की समस्या से ग्रसित थीं। स्वजन के अनुसार जेएन मेडिकल कॉलेज के पूर्व सीएमओ डॉ. अमजद अली रिजवी के धौर्रा स्थित एसआइजी हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने ऑपरेशन की सलाह दी। रविवार को सुबह साढ़े नौ बजे मरीज को ऑपरेशन के लिए बुलाया गया। 11 बजे ऑपरेशन थिएटर में मरीज को ले जाया गया। जेएन मेडिकल कॉलेज के ही डॉ. सरफराज को एनेस्थीसिया देने के लिए बुलाया गया। एनेस्थीसिया देने के बाद ही मरीज की तबीयत बिगड़ गई। कुछ देर बाद उनकी मृत्यु हो गई। इससे गुस्साए लोगों ने हॉस्पिटल में हंगामा किया। पुलिस को भी फोन करके बुला लिया गया। स्वजन की तहरीर पर पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। सीओ सिविल लाइन सर्वम सिंह के अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हार्ट अटैक से मृत्यु होना बताया जा रहा है। मामले की जांच की जा रही है।

किसान के बेटे ने किया कमाल, अंतरिक्ष की ऊंचाइयों को छूकर रचा इतिहास

किसान पुत्र सचिन शर्मा ने रॉकेट प्रक्षेपण में निभाई मुख्य भूमिका।

गुजरात का पहला साउंडिंग रॉकेट स्वदेशी तकनीक से निर्मित।

अब रीयूजेबल सैटेलाइट लॉन्चर 'इनफिनिटी वन' पर कार्य जारी।

अलीगढ़। गभाना के एक छोटे से गांव की मेधा ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अपनी चमक बिखेरते हुए जनपद का नाम रोशन किया है। नगला राजू निवासी एक किसान के बेटे ने अपनी तकनीकी कुशलता का लोहा मनवाते हुए गुजरात के पहले 'साउंडिंग रॉकेट' के सफल प्रक्षेपण में निर्णायक भूमिका निभाई है। 15 मार्च को जब यह रॉकेट धोलेरा के आसमान को चीरते हुए खंभात की खाड़ी के ऊपर पहुंचा, तो भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र में एक नया स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया।

तीन साल की तपस्या और स्वदेशी तकनीक

नगला राजू निवासी किसान भोलाशंकर शर्मा के ज्येष्ठ पुत्र सचिन शर्मा अपने सहयोगी योगेश शर्मा के साथ अहमदाबाद के सानंद में कृष्णा इंजीनियरिंग नाम से संस्थान संचालित करते हैं। सचिन ने ओमस्पेस के सीईओ डॉ. रविंद्र राज के विजन को धरातल पर उतारने के लिए सिंगल-स्टेज सब-आर्बिटल साउंडिंग रॉकेट के निर्माण का बीड़ा उठाया। टीम के साथ मिलकर रॉकेट के इंजीनियरिंग फैब्रिकेशन, मॉडल मेकिंग और टेक्निकल असेंबली की जिम्मेदारी संभाली। करीब तीन साल के कड़े परिश्रम और अत्याधुनिक कार्बन फाइबर एयरफ्रेम के उपयोग से इस स्वदेशी रॉकेट को तैयार किया गया।

धोलेरा के तट पर गूंजा भारत का शंखनाद

सुरक्षा एवं लाजिस्टिक के लिए भारतीय तटरक्षक बल और विमानपत्तन प्राधिकरण से अनुमति के बाद 15 मार्च को धोलेरा के बावलियारी गांव से इसे लान्च किया गया। गुजरात के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री अर्जुन मोढवाडिया की उपस्थिति में रॉकेट ने सफलतापूर्वक तीन किलोमीटर की लक्षित ऊंचाई प्राप्त की। सचिन के मुताबिक यह रॉकेट हल्का होने के साथ अत्यंत सुदृढ़ है, जो आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को पुष्ट करता है।

रामकृष्णनगर में बदलाव की दस्तक! उपेक्षा के खिलाफ युवा उत्तम दास की राजनीतिक शुरुआत- एक ऐतिहासिक चुनौती

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: लंबे समय से चली आ रही उपेक्षा, वंचना और खामोशी के खिलाफ अब सीधे संघर्ष का आह्वान किया गया है। श्रीभूमि जिले के सोनबिल के पास स्थित नागेंद्रनगर के एक संघर्षशील युवा उत्तम दास ने अपनी राजनीतिक यात्रा की घोषणा की है, जिसने रामकृष्णनगर समेत पूरे क्षेत्र में जोरदार हलचल पैदा कर दी है। साधारण परिवार में जन्मे, लेकिन असाधारण दृढ़ संकल्प के साथ उन्होंने बचपन से ही कड़ी मेहनत और संघर्ष के जरिए खुद को गढ़ा है। जिले के जवाहर नवोदय विद्यालय, हरिनगर से अपनी शिक्षा की शुरुआत कर उन्होंने सिलचर पॉलिटेक्निक से इंजीनियरिंग डिप्लोमा हासिल किया। शिक्षा और जीवन के अनुभव ने उन्हें सिखाया है अगर बदलाव चाहिए, तो मैदान में उतरना ही होगा। 2026 के विधानसभा चुनाव में बिना किसी बड़े राजनीतिक सहारे या आर्थिक ताकत के उतरने का ऐलान उन्होंने किया है। उनका सबसे बड़ा बल है आत्मविश्वास, साहस और समाज के प्रति गहरी जिम्मेदारी। इस घोषणा के बाद एक बड़ा सवाल सामने आया है क्या एक सामान्य युवा वर्षों पुरानी राजनीतिक परंपराओं को चुनौती दे पाएगा? योग्यता होने के बावजूद एक खास समाज को बार-बार नजरअंदाज किए जाने का मुद्दा अब तेज हो गया है। बड़े राजनीतिक दलों पर पक्षपात के आरोप लग रहे हैं। एक ही चेहरे की बार-बार पुनरावृत्ति के बीच कौइबर्त समाज का प्रतिनिधित्व लगभग न के बराबर है। उत्तम दास इस असमानता को आत्मसम्मान की लड़ाई मानते हैं।

उनका स्पष्ट कहना है 'यह सिर्फ एक चुनाव नहीं है, यह हमारे अस्तित्व का सवाल है।' उन्होंने समाज में फैली एक और बड़ी समस्या डर की संस्कृति की ओर भी ध्यान दिलाया है। आज लोग सच बोलने से डरते हैं, अन्याय के खिलाफ खड़े होने से डरते हैं, यहां तक कि अपने अधिकारों की मांग करने से भी पीछे हट जाते हैं।उनका आह्वान है 'डर को जीतने मत दीजिए। एकजुट होकर खड़े हों बदलाव जरूर आएगा।' वह खोखले वादों की राजनीति नहीं, बल्कि जमीनी संघर्ष में विश्वास रखते

हैं। उन्हें पता है कि सभी समस्याओं का समाधान एक दिन में संभव नहीं है, लेकिन उन्होंने लोगों की आवाज बनकर अन्याय के खिलाफ लगातार लड़ने का संकल्प लिया है। आज यह संघर्ष सिर्फ एक चुनावी लड़ाई नहीं है यह एक उपेक्षित समाज की आत्मपहचान वापस पाने का आंदोलन है, जो धीरे-धीरे एक बड़े और निर्णायक बदलाव की दिशा में बढ़ रहा है। जनता के साथ, जनकल्याण के मार्ग पर इसी संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं उत्तम दास। अब देखना यह है कि जनता किस पर अपना भरोसा जताती है।

अलीगढ़ के टीकाराम कॉलेज में चपरासी की हत्या, एक लाख के लेनदेन में वारदात

अलीगढ़। टीकाराम डिग्री कॉलेज परिसर में रविवार को चपरासी की ईंट से हमला कर हत्या कर दी। शिनाख्त छिपाने के लिए शव को जलाने का भी प्रयास किया। हत्या के पीछे एक लाख रुपये का लेनदेन बताया जा रहा है। पुलिस ने साइकिल स्टैंड संचालक को हिरासत में ले लिया है। किशनपुर निवासी 42 वर्षीय धर्मेंद्र टीकाराम डिग्री कॉलेज में चपरासी थे। रात से वह लापता थे। स्वजन उन्हें तलाशने लगे थे। सुबह वह छह बजे ड्यूटी पर कॉलेज पहुंचे। इसके बाद वह कॉलेज में नजर नहीं आए। कॉलेज के अन्य स्टाफ ने उन्हें तलाश लेकिन कहीं नहीं नजर आए। इसके बाद पुलिस को सूचना दी। सीसीटीवी फुटेज की मदद से जांच शुरू की। रविवार दोपहर में उनका शव कॉलेज परिसर में मिला। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, धर्मेंद्र सुबह सवा छह बजे अपनी ड्यूटी पर पहुंचे थे। इसी दौरान पीछे से आए हमलावरों ने उन्हें घेर लिया और उन पर हमला किया। शव को जलाने का भी प्रयास किया। सीओ सिविल लाइन सर्वम सिंह के अनुसार, धर्मेंद्र के साइकिल स्टैंड संचालक पर एक लाख रुपये उधार थे। रुपये मांगने पर उनकी हत्या कर दी। स्टैंड संचालक को हिरासत में ले लिया है।

दिल्ली में नकली ब्रांड का खेल, उत्तम नगर में छापेमारी; हार्पिक ब्रांड की फर्जी बोतलें बरामद

● उत्तम नगर में नकली हार्पिक ट्वायलेट क्लीनर का भंडाफोड़।

● पुलिस ने दुकान से 29 फर्जी हार्पिक बोतलें जब्त कीं।

● दुकान संचालक अशोक कुमार पर कॉपीराइट उल्लंघन का केस।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पश्चिमी दिल्ली। द्वारका जिला पुलिस की डीआईयू टीम ने कॉपीराइट उल्लंघन के मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए उत्तम नगर इलाके में नकली उत्पादों के धंधे का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने बिंदापुर रोड स्थित अनूप नगर की एक दुकान पर छापेमारी कर नामी कंपनी के ब्रांड की नकली हार्पिक ट्वायलेट क्लीनर लेबल लगे 29 बोतलें बरामद की हैं। इस मामले में दुकान संचालक अशोक कुमार के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है।

पुलिस के अनुसार, रेकिट बेंकिसर (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के अधिकृत प्रतिनिधि निश्चय जैन ने शिकायत दी थी कि बाजार में कंपनी के उत्पादों की नकली

पैकेजिंग कर उन्हें बेचा जा रहा है, जिससे कॉपीराइट का उल्लंघन हो रहा है। शिकायत के आधार पर एसीपी डीआईयू के निर्देशन में एसआई विकास कुमार की टीम ने 25 मार्च की शाम छापेमारी की।

पुलिस ने बरामद माल को जब्त कर सील कर लिया

मौके पर दुकान संचालक अशोक कुमार मौजूद मिला, जिसे जांच के दौरान आरोपों से अवगत कराया गया। तलाशी के दौरान दुकान से 600 एमएल की 29 संदिग्ध बोतलें बरामद हुईं, जिन्हें प्रथम दृष्टया नकली पाया गया। पुलिस ने बरामद माल को जब्त कर सील कर लिया है।

आरोपी के खिलाफ कॉपीराइट एक्ट की धारा 63 के तहत मामला दर्ज किया गया है। फिलहाल पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि आरोपी नकली सामान कहां से मंगाता था और इस पूरे नेटवर्क में और कौन-कौन शामिल हैं।

अरुणाचल हाईवे मुआवजा घोटाला: ED की बड़ी कार्रवाई, 2.37 करोड़ की संपत्ति अटैच

● प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने ट्रांस-अरुणाचल हाईवे जमीन मुआवजा घोटाले में 2.37 करोड़ की संपत्तियां अस्थायी रूप से कुर्क की हैं. यह कार्रवाई PMLA कानून के तहत हुई है. ED के अनुसार ये संपत्तियां सरकारी मुआवजे के पैसों की हेराफेरी से बनाई गई थीं जिससे सरकारी खजाने को भारी नुकसान हुआ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ईटानगर यूनिट ने ट्रांस-अरुणाचल हाईवे (टीए एच) जमीन मुआवजा घोटाले में बड़ी कार्रवाई की है. ईडी नेकरीब 2.37 करोड़ रुपये की संपत्तियां अस्थायी रूप से अटैच (जब्त) कर ली हैं. यह कार्रवाई 23 मार्च 2026 को PMLA कानून के तहत की गई. ईडी का कहना है कि ये संपत्तियां सरकारी मुआवजे के पैसों की हेराफेरी से बनाई गई हैं।

ईडी के मुताबिक, अटैच की गई संपत्तियों में कुरुंग कुमेय जिले के डोलो गांव में करीब 47,350 वर्ग मीटर जमीन (तादर बाबिन के नाम) और कीई पन्योर जिले के याचुली इलाके में स्थित एक पारंपरिक मकान

(लिखा माज के नाम) शामिल है. जांच एजेंसी का कहना है कि ये संपत्तियां सरकारी मुआवजे के पैसों की हेराफेरी से बनाई गई.

सरकारी खजाने को भारी नुकसान

यह घोटाला ट्रांस-अरुणाचल हाईवे के पोटिन-बोपी स्ट्रेच के लिए जमीन अधिग्रहण के दौरान हुआ. ईडी की जांच में सामने आया कि असली मुआवजे से कहीं ज्यादा रकम बांट दी गई. फैक्ट-फाइंडिंग कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार, करीब 44.98 करोड़ रुपये का अतिरिक्त भुगतान किया गया, जिससे सरकारी खजाने को भारी नुकसान हुआ।

कई बड़े अधिकारियों और निजी लोगों की भूमिका

इसके साथ ही जांच में कई बड़े अधिकारियों और निजी लोगों की भूमिका सामने आई है. इसमें उस समय के डिप्टी कमिश्नर केमो लोल्लेन, जिला भूमि राजस्व अधिकारी भारत लिंगु, जूनियर इंजीनियर टोको ताजे और कबाक भट्ट जैसे नाम शामिल हैं. आरोप है कि इन्होंने मिलकर फर्जी कागजात बनाए, मुआवजे की रकम बढ़ाकर दिखाई और गलत लोगों के नाम पर पैसे जारी किए. वहीं, लिखा माज और तादर बाबिन को भी फर्जी तरीके से मुआवजा पाने वाला बताया गया है. ईडी का कहना है कि इन लोगों ने पैसे निकालकर उसे अलग-अलग जगहों पर घुमाया, ताकि काले धन को साफ दिखाया जा सके।

6 फरवरी को कई जगहों पर छापेमारी

ईडी इससे पहले 6 फरवरी 2026 को कई जगहों पर छापेमारी कर चुकी है. इस दौरान लिखा माज के पास से 2.40 करोड़ रुपए नकद और तादर बाबिन के पास से 22 लाख रुपए बरामद हुए थे. इसके अलावा करीब 1.19 करोड़ रुपये बैंक खातों में फ्रीज किए गए थे.अब तक इस मामले में ईडी कुल मिलाकर करीब 10.13 करोड़ रुपये की अवैध संपत्ति को अटैच, जब्त या फ्रीज कर चुकी है. ईडी ने पहले 2024 में इस मामले में एक आरोपपत्र भी दाखिल किया था, जिस पर कोर्ट संज्ञान ले चुका है. अब नई जांच में और लोगों की भूमिका सामने आ रही है. एजेंसी का कहना है कि आगे भी इस मामले में और खुलासे हो सकते हैं।

आजमगढ़ हरबंशपुर स्थित सर्वोदय पब्लिक स्कूल के प्रांगण में वार्षिक परीक्षा परिणाम वितरण समारोह का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आजमगढ़ हरबंशपुर स्थित सर्वोदय पब्लिक स्कूल के प्रांगण में वार्षिक परीक्षा परिणाम वितरण समारोह का आयोजन किया गया। आजमगढ़ कार्यक्रम की शुरूआत माँ सरस्वती के सम्मुख विद्यालय के प्रबंधक महोदय द्वारा दीप प्रज्वलन से प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में माँ सरस्वती की प्रतिमा पर विद्यालय की निदेशिका महोदया के द्वारा माल्यार्पण किया गया तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा पुष्प अर्पित किया गया। साथ ही साथ विद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना प्रस्तुति की गई। इसके बाद विद्यालय की प्रबन्ध निदेशिका श्रीमती कंचन यादव जी ने छात्र एवं छात्राओं को जिन्होंने अपनी कक्षाओं के वर्ग में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किये, उन्हें मेडल और प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया। पुरस्कृत किये गये छात्र/छात्राओं के अभिभवाकों को भी मंच पर बुला कर सम्मानित किया गया।

कक्षा वर्गवार उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र निम्नलिखित है-

कक्षा नर्सरी अनन्या यादव, दित्या रावत, अर्थव कक्षा-एल0के0जी- नविष्का, देवांशी सिंह यादव, अदिति यादव कक्षा-यू0के0जी आद्वित पांडेय, आरवी, जेयाना खान, नित्या प्रजापति, आर्यन पनिका, रिषभजायसवाल, प्रांजल कक्षा-एक तान्या यादव, आदिश्री यादव, गरिमा यादव, आराध्या, हर्ष बौद्ध, आर्यावीर, कक्षा-दो आराध्या सिंह, आर्यन यादव, समरीद्धी चौबे, शास्वत गौरव मौर्या, खान बरिरा, रिषि यादव, वेदिका अग्रवाल, आरिज, कृष्ण कुमार यादव, रिषभ यादव, योगिता अग्रवाल, कक्षा तीन रिया प्रकाश, आर्या यादव आर्यन यादव, श्रेया श्रीवास्ताव, अभिनिता, आर्यन मौर्या, रूद्राक्षी द्विवेदी, शिप्रा, संयम यादव, आद्रिका सिंह, कक्षा-चार आस्था पांडेय, सृष्टि यादव, प्रगति यादव, आस्थे दूबे, वैदता शालिनी, सृष्टि यादव, आरूष यादव, रूद्रांश चौहान, शिवांश यादव, कक्षा पाँच परिधि, दिव्यांश राय, पीहू पांडेय, आयूषी मौर्या, शिवांगी यादव, हर्ष प्रकाश यादव, प्रतिक्षा यादव, वर्तिका चौहान, अर्पना मौर्या, नन्दीनी चौहान, अर्नी पटेल, खूशी सिंह यादव, सूर्याश कक्षा-छः आद्या बरनवाल, आराध्या मौर्या, साक्षी मौर्या, अनन्या यादव, आराध्या यादव, टिया प्रकाश, आदर्शनी यादव, दिपांकर तिवारी, संघप्रिय गौतम, प्रभात यादव, प्रत्युष यादव, नवीश यादव, अभिनव यादव कक्षा-सात विधि गौतम, दिक्षा चौरसिया, शालू यादव, दिव्या यादव आकांक्षा यादव, आराध्या सिंह, देव दिव्यांश यादव, नैतिक राव, अंश यादव, देवांश गिरी, प्रखर यादव, अजिंक्य यदुवंशी कक्षा आठ सलोनी यादव, अन्नु यादव, साक्षी यादव, दिसी चौहान, श्रृष्टि पांडेय, आयुषी यादव, आराध्या यादव, आदित्य यादव, अकृष्ट सिंह यादव, अक्षज बरनवाल, प्रज्जवल चौहान, प्रशांत यादव, कुशाग्र राय, पुष्कर कुमार चौबे, अभिनय यादव, अंतरिक्ष मौर्या, प्रतिक सिंह, कक्षा नौ अनुष्का यादव, आयुषी यादव, वर्तिका यादव, कृतिका यादव, श्रेष्ठा तिवारी, अंशिका यादव, साक्षी यादव, आयुषी यादव, पलक यादव, हरिओम यादव, कार्तिकेय यादव, कार्तिकेय सिंह, आदित्य कुमार यादव, आदित्य यादव, अंश यादव, मंयक यादव, हर्षित यादव, अर्पित यादव, विजय शंकर यादव, आयूष सिंह, श्रेयांश शर्मा, आलोक यादव।

कक्षा ग्यारह वंशिका राव, आयुषी मौर्या, श्रेया सिंह, तेजस वर्मा, राज सिंह दूर्गेश राय, वैभवी यादव, अंशिका राय, वैष्णवी सिंह, विमलेश यादव, आदित्य मौया, पुष्कर गुप्ता, मानवी मोदनवाल, अर्पित यादव, हर्षित यादव, महताब अहमद, उज्जवल शुक्ला, सत्यम यादव, नेहा यादव, आकांशु यादव, साक्षी यादव इसी क्रम में सर्वोदय पब्लिक इण्टर कालेज में कक्षा वर्ग वार छात्र निम्नलिखित हैं- कक्षा-छः अर्पित मौर्या, श्रेया यादव, अनमोल यादव, कक्षा-सात अनुज यादव, उज्जवल यादव, दिव्यांश पांडेय, कक्षा-आठ अरूषि यादव, श्रेया यादव, अंशू यादव, कक्षा नौ दिव्या यादव, प्रिया यादव, साक्षी यादव कक्षा ग्यारह हेमंत गौतम, प्रज्ञांश मिश्रा, हेमंत यादव, ऐंजिला बेन, दिपांशी यादव, अंशिका यादव।

विद्यालय के प्रबंन्धक श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव जी ने कहा कि ये बच्चे देश के भविष्य हैं। बच्चों का पढ़ाई की तरफ रूझान व परिश्रम जो उन्होंने पूरे वर्ष भर किया उसका परिणाम आज उन्हें मिला है। प्रबंधक जी ने सभी बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना की। प्रबंधक जी ने वार्षिक परिणाम के अवसर पर कहा की कक्षा 9 से 12 में पढ़ रहे बच्चों के लिए नीट और जेई की फाउन्डेशन कक्षाएँ भी इस वर्ष से शुरू की जा रही है जिससे बच्चे अपने जनपद में रहकर ही कम्पटीशन की पढाई भी पूरी कर सकते हैं। विद्यालय के उपप्रधानाचार्य श्री संजय कुमार विश्वकर्मा ने भी बच्चों के इस उत्कृष्ट प्रदर्शन पर उन्हे बधाई देते हुये उचित मार्ग दर्शन किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की साथ ही अनुशाशित जीवन का संदेश भी दिया। इस अवसर पर समस्त अध्यापकगण एवं अन्य कर्मचारीगण भी उपस्थित थे।

नोएडा एयरपोर्ट पर विश्वस्तरीय सुरक्षा का इंतजाम, भारत निर्मित मिनी रोबोट और 360 डिग्री AI कैमरे से होगी निगरानी

● भारत निर्मित एमआरओवी रोबोटिक सिस्टम बम निष्क्रिय करेगा।

● रनवे पर हाई-रेजोल्यूशन और 360 डिग्री एआई कैमरे।

● सी आई एस एफ ने संभाली सुरक्षा, क्यूआरटी को बख्तरबंद वाहन।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जेवर। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लोकार्पण के बाद यापल संचालन की तैयारियों में जुटा है। यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए एयरपोर्ट पर विश्वस्तरीय सुरक्षा देने के पुख्ता इंतजाम किए जा रहे हैं। रनवे पर निगरानी के लिए हाई रेजोल्यूशन कैमरे लगाए गए हैं। भारत में निर्मित अत्याधुनिक मिनी रिमोटली आपरेटेड व्हीकल (एमआरओवी) रोबोटिक सिस्टम बेहद जोखिम वाले बम का पता लगाने और निष्क्रिय करने के लिए सीआईएसएफ की क्विक रिएक्शन टीम को सौंपा जा चुका है।

वायरलेस सिस्टम से करेंगे ऑपरेट

एयरपोर्ट की सुरक्षा को लेकर यमुना इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्रा. लि. ने सिक्योरिटी डिफेंस सिस्टम द्वारा विकसित मिनी रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल को तैनात दी है। भारत में निर्मित अत्याधुनिक एमआरओवी रोबोटिक सिस्टम बेहद जोखिम वाले बम का पता लगाने और निष्क्रिय करने के लिए तैयार किया गया है। इस दूर बैठकर वायरलेस सिस्टम से ऑपरेट किया जाता है। एमआरओवी में लगे सेंसर संदिग्ध वस्तु या बम का पता लगाकर बहुत कम समय में सुरक्षित स्थान पर ले जाकर बम आदि को निष्क्रिय करने की क्षमता है।

अलग से एआई कैमरे लगाए गए

इस सिस्टम से एयरपोर्ट पर तैनात सुरक्षा कर्मियों को सुरक्षित रखते हुए तेजी से सटीक और जीवन रक्षक आपरेशन को आपातकाल में पूरा किया जा सकता है। 4200 मीटर लंबे रनवे की निगरानी के लिए प्रत्येक 50 मीटर पर हाई रेजोल्यूशन एआई कैमरे लगाए गए है। साथ ही, प्रत्येक 100 मीटर पर 360 डिग्री नजर रखने के लिए भी अलग से एआई कैमरे लगाए गए हैं।

सीआईएसएफ ने संभाली एयरपोर्ट की सुरक्षा

एयरपोर्ट की सुरक्षा के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय की तरफ से 1030 सीआईएसएफ (केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल) जवानों की तैनाती के लिए स्वीकृत दी गई थी। जिसके बाद सीआईएसएफ ने एयरपोर्ट की सुरक्षा को संभाल लिया है। उत्तर प्रदेश पुलिस की तरफ से एयरपोर्ट की सुरक्षा के लिए घरेलू और अंतराष्ट्रीय यात्रियों के लिए दो पुलिस थानों में विशेष प्रशिक्षण पुलिसकर्मीयों की तैनाती की जा रही है। साथ ही यापल के निजी सुरक्षा कर्मी भी एयरपोर्ट की सुरक्षा में तैनात रहेंगे।

क्यूआरटी बख्तरबंद गाड़ी से होगी लैस

सीआईएसएफ जवानों की तैनाती के साथ ही क्विक रिएक्शन टीम को आतंकी हमले जैसी आपात स्थिति से निपटने के लिए बख्तरबंद एसयूवी दो वाहन को सौंपे गए हैं। ये बख्तरबंद वाहन बी-6 स्तर की बैलिस्टिक सुरक्षा के लिए 270 डिग्री रेंज के साथ गन बुर्ज पर मशीनगन और मल्टी लेयर्ड बुलेटप्रूफ ग्लास से लैस जो सुरक्षा कर्मियों को भी ग्रेनेड और माइंस के हमले से बचाने वाली बख्तरबंद गाड़ी की तैनाती की गई है।

ससुराल गए CRPF जवान के बंद मकान में लाखों की चोरी, डीवीआर भी ले गए शातिर चोर

अलीगढ़। इगलास के समीप मथुरा मार्ग पर रोशन पुष्पधाम कालोनी में चोरों ने दिल्ली के डीजी कार्यालय में तैनात सीआरपीएफ जवान के बंद मकान को निशाना बनाया। शनिवार की रात चोरों ने ताला तोड़कर घर में रखी नकदी और करीब 10 से 15 लाख रुपये के जेवरात पार कर दिए। शातिर चोर साक्ष्य मिटाने के लिए सीसीटीवी कैमरे का डीवीआर भी अपने साथ ले गए।

यह है पूरा मामला मूल रूप से गांव महदौरा निवासी पंकज भदौरिया पुत्र अशोक कुमार सीआरपीएफ के डीजी कार्यालय दिल्ली में कार्यरत हैं। उन्होंने हाल ही में एक नई गाड़ी खरीदी थी। शनिवार को वह अपने परिवार के साथ गाड़ी का पूजन कराने के लिए ससुराल हाथरस के थाना मुरसान के गांव लुहेटा गए थे और रात में वहीं रुक गए। घर पूरी तरह बंद था, जिसका फायदा उठाकर चोरों ने धावा बोल दिया। रविवार की सुबह दूधिया दूध देने पहुंचा और मकान का ताला टूटा देखा, तो उसने तत्काल पंकज को सूचना दी। सूचना मिलते ही जब वह घर पहुंचे तो वहां का नजारा देख उनके होश उड़ गए। कमरों की अलमारियां टूटी पड़ी थीं और सारा सामान अस्त-व्यस्त फैला हुआ था। पीड़ित के अनुसार चोर करीब 90 हजार रुपये और 10-15 लाख रुपये की ज्वेलरी ले गए हैं। चौंकाने वाली बात यह रही कि चोरों ने पहचान छिपाने के लिए घर में लगे सीसीटीवी का डीवीआर भी चोरी कर लिया। घटना की सूचना पर स्थानीय पुलिस ने मौके पर पहुंचकर निरीक्षण किया।

दिल्ली में प्रॉपर्टी विवाद को लेकर खूनी झड़प, चचेरे भाई ने महिला शिक्षिका पर लोहे की सरिये से किया हमला

● शिक्षिका पर चचेरे भाई ने सरिये से हमला किया।

● नजफगढ़ में संपत्ति विवाद के कारण हुई घटना।

● पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पश्चिमी दिल्ली। नजफगढ़ इलाके में प्रापर्टी विवाद ने हिंसक रूप ले लिया, जहां एक महिला शिक्षिका पर उसके ही चचेरे भाई ने लोहे की सरिये से हमला कर दिया। हमले में महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस ने उसे नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया।

बाबा हरिदास नगर थाना पुलिस ने पीड़िता के बयान के आधार पर 26 मार्च को आरोपित भाई के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।पुलिस के अनुसार, 37 वर्षीय ज्योति साई बाबा एन्क्लेव, नजफगढ़ में परिवार के साथ रहती हैं और दिचाऊ कलां के एक सरकारी स्कूल में शिक्षिका हैं।

संदिग्ध गतिविधि और ताला तोड़ने की आवाज सुनाई दी

उन्होंने पुलिस को बताया कि 18 मार्च की रात करीब 9:40 बजे उन्हें अपने दिचाऊ कलां स्थित प्लाट में लगे सीसीटीवी कैमरे में संदिग्ध गतिविधि और ताला तोड़ने की आवाज सुनाई दी। इस पर वह तुरंत मौके पर पहुंचीं। वहां पहुंचने पर उन्होंने अपने चचेरे भाई जसवंत और उसकी पत्नी को प्लॉट के अंदर पाया। आरोप है कि प्रॉपर्टी को लेकर पहले से चल रहे विवाद के बीच जब ज्योति ने इसका विरोध किया तो जसवंत ने लोहे की सरिये से उन पर हमला कर दिया। बचाव के दौरान आरोपितों ने उन्हें पकड़कर जमीन पर गिरा दिया और बेरहमी से मारपीट की, जिससे उनके कंधे और छाती पर गंभीर चोटें आईं।

पति और बच्चों को जान से मारने की धमकी भी दी

पीड़िता के अनुसार, आरोपितों ने उन्हें, उनके पति और बच्चों को जान से मारने की धमकी भी दी। घटना के दौरान उन्होंने 112 नंबर पर काल कर पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस ने घटनास्थल से लोहे की सरिये बरामद कर ली है। साथ ही, पीड़िता द्वारा बताए गए सीसीटीवी फुटेज को भी जांच में शामिल किया जाएगा।अस्पताल से लौटने के बाद 26 मार्च को पीड़िता ने अपना बयान दर्ज कराया, जिसके आधार पर पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर लिया है। फिलहाल मामले की जांच जारी है।